2 इतिहास की पुस्तक - भाग दूसरा

1 दाऊद के बेटे सुलैमान का राज्य मज़बूत
हो चुका था। उसे बराबर प्रभु का साथ
मिल रहा था। इसलिए वह तरक्की करता
गया। 2 सुलैमान ने सहस्त्रपतियों, शतपतियों,
न्यायियों और सभी अमीरों से जो पितरों के
कुटुम्बों के खास-खास आदमी थे, बातचीत
की 3 सभी लोगों के साथ सुलैमान गिबोन के
ऊँचे स्थान पर गया। उस समय तक मिलाप
वाला तम्बू, वहीं पर था। 4 लेकिन प्रभु के
बक्से को दाऊद किर्यत्यारीम से उस जगह
ले आया था। यरूशलेम में उसने उसके लिए
एक तम्बू खड़ा किया था। 5 बसलेल ने जिस
वेदी को बनाया था, वह गिबोन में प्रभु के
निवास स्थान के सामने थी। 6 वहीं पीतल
की वेदी के सामने जाकर सुलैमान ने एक
हज़ार होमबलियाँ चढ़ायीं। 7 प्रभु ने उसी रात
सुलैमान को दर्शन में कहा, "तुम जो चाहते
हो, माँगो।" 8 सुलैमान का जवाब था,"आप
तो मेरे पिताजी पर बड़ी दया दिखाते रहे है।
उनकी जगह पर आपने मुझे राजा बनाया है।
9 अब हे प्रभु परमेश्वर! आपके द्वारा मेरे
पिता को दिए गए शब्द पूरे हों। मेरे लोग
पृथ्वी के किनकों की तरह अनगिनित हैं।
10 मुझे ऐसी समझ और ऐसा इल्म दीजिए,
ताकि मैं ईमानदारी और सच्चाई से इन्साफ़
कर पाऊँ।" 11 प्रभु ने सुलैमान से कहा,
"तुमने दौलत, नाम, लम्बी उम्र और अपने
दुश्मनों की बर्बादी की माँग नहीं रखी। तुमने
केवल बुद्धि और ज्ञान की चाहत रखी है।
12 इसलिए तुम्हारी माँग पूरी की जाती है।
साथ ही मैं तुम्हें इतनी धन-दौलत और नाम
दूँगा, जितना उससे पहले न किसी राजा
को मिला था, न ही भविष्य में मिलेगा।
13 तब सुलैमान गिबोन के ऊँचे स्थान से[a]
के सामने से यरूशलेम आया। वहीं से वह
इस्राएल पर हुकूमत करने लगा। 14 इसके
बाद सुलैमान रथ और सवार इकट्ठा करने
लगा। उसके पास चौदह सौ रथ और बारह
हज़ार सवार थे। उसने उन्हें रथों के नगरों
में और यरूशलेम में राजा के पास ही रखा।
15 उसने यरूशलेम में सोने-चाँदी की कीमत
ज़्यादा होने की वजह से पत्थरों की सी कर
दी। उसने देवदार की कीमत, गूलर की सी
कर दी। 16 सुलैमान के घोड़े मिस्र के हुआ
करते थे। राजा के व्यापारी पूरे झुण्ड के लिए
तय दाम पर खरीदा करते थे। 17 एक रथ छैः
सौ शेकेल चाँदी पर और एक घोड़ा डेढ़ सौ
शेकेल चाँदी पर मिस्र से खरीदा जाता था।
इसी मूल्य पर वे हित्तयों के सभी राजाओं
और अराम के राजाओं के लिए उन्हीं के द्वारा
लाया करते थे।

2 सुलैमान ने प्रभु के लिए भवन और
अपना राजमहल बनाने के बारे में
सोचना शुरू किया। 2 इसलिए उसने सत्तर
हज़ार बोझ ढोने वाले और अस्सी हज़ार
पहाड़ से पत्थर काटने वाले और पेड़ काटने
वालों पर, तीन हज़ार छैः सौ अधिकारी रखे।
3 सोर के राजा हूराम को सुलैमान ने संदेश
दिया कि जैसा उसने दाऊद के समय देवदार
भेजे थे, फिर से भेजे। 4 उसने कहा, "मैं प्रभु
के लिए भवन बनाने जा रहा हूँ। 5 इसलिए कि

[a] **1.13** मिलाप वाले तम्बू

हमारे प्रभु महान हैं, यह भवन भी आलीशान
बनाया जाएगा। 6 लेकिन क्या किसी के पास
इतनी ताकत है, कि उनके लिए भवन बना
सके वह तो स्वर्ग में भी नहीं समा सकते,
मैं क्या हूँ कि धूप जलाने को छोड़ किसी
और काम के लिए भवन बनाऊँ। 7 इसलिए
तुम मेरे पास ऐसे इन्सान को भेज दो, जो
सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, बैजनी, नीले और
लाल कपड़ों की कला में माहिर हो। उसे
मेरे पिता दाऊद द्वारा ठहराए कारीगरों के
साथ काम करना होगा। 8 तुम लबानोन से
देवदार, सनौवर और चन्दन की लकड़ी
भेजना। तुम्हारे लोग लबानोन में पेड़ काटना
जानते हैं। तुम्हारे लोगों के साथ मेरे लोग भी
काटना सीख जाएँगे। 9 जो भवन मैं बनाना
चाहता हूँ वह शान से भरपूर होगा। 10 तुम्हारे
लोग जो लकड़ी काटेंगे, उन्हें मैं बीस हज़ार
कोर कुटा हुआ गेंहूँ, बीस हज़ार कोर जौ,
बीस हज़ार बत तेल दूँगा। 11 सोर के राजा
को चिट्ठी में लिख भेजा कि प्रभु अपने लोगों
से प्यार करते हैं। इसीलिए तुम्हें उन्होंने चुना
है। 12 हूराम ने आगे लिखा, इस्राएल के प्रभु
की बड़ाई हो, क्योंकि उन्होंने आकाश और
पृथ्वी को बनाया है। उन्हीं ने दाऊद राजा को
एक बुद्धिमान और समझ रखने वाला बेटा
दिया है, ताकि वही राजमहल और प्रभु के
लिए भवन बनाए। 13 इसलिए मैं हूराम -अबी
को भेज रहा हूँ। वह समझदार इन्सान है।
14 वह दानी महिला का बेटा है। उस का
पिता सोर का है। वह बहुत योग्य कारीगर
है। उसे सभी धातुओं, हर रंग के कपड़ों
का काम और नक्काशी आती है। इसलिए
तुम्हारे निपुण लोगों के साथ उसे भी काम
मिल जाए। 15 तुमने जो अनाज भेजने की बात
कही है, वह अच्छी है। 16 जितनी लकड़ी की
ज़रूरत है हम मुहैया कराएँगे। 17 तब सुलैमान
ने परदेशियों की गिनती करना शुरू कर दी।
वे लोग डेढ़ लाख, तीन हज़ार छै सौ आदमी
थे। 18 उन में से उसने सत्तर हज़ार बोझ उठाने
वाले, अस्सी हज़ार पहाड़ पर पत्थर काटने
वाले और पेड़ काटने वाले और तीन हज़ार
छै सौ लोगों से काम लेने वाले मुखिये ठहराए
गए।

3 तब सुलैमान ने मोरिय्याह पहाड़ पर
उसी जगह प्रभु की आराधना की ईमारत
बनानी शुरू की, जिसे उसके पिता दाऊद ने
दर्शन पाकर यबूसी ओर्नान के खलिहान में
तैयार की थी। 2 यह बनवाने का काम उसके
शासन के दूसरे महीने के दूसरे दिन को शुरू
हुआ। 3 इस इमारत की लम्बाई साठ हाथ
और चौड़ाई बीस हाथ की थी। 4 इमारत के
सामने आँगन की लम्बाई चौड़ाई यानि कि
बीस के बराबर थीं। अन्दर से सुलैमान ने
उसे शुद्ध सोने से मढ़वाया था। 5 ईमारत के
बड़े हिस्से की छत सनौवर की लकड़ी से
बनवा कर उसे बढ़िया तरीके से सोने से
मढ़वा दिया। उस पर खजूर के पेड़ों की और
साँकलों की नक्काशी करवायी। 6 खूबसूरती
के लिए मोती जड़वा दिए। इस्तेमाल किया
गया सोना पर्वेम का था। 7 ईमारत की
कड़ियों, डेवढ़ियों, दीवारों और दरवाजों को
सोने से मढ़वा दिया गया। दीवारों पर करूब
भी खुदवाए गए। 8 भवन की परम पवित्र
जगह की लम्बाई चौड़ाई के बराबर बीस
हाथ की थी। उस में छै सौ किक्कार सोना
लगा। 9 पचास शेकेल तो सोने की कीलों का
वज़न था। छज्जे भी सोने के मढ़वाए गए।
10 परमपवित्र जगह में करूब नक्काशे गए,
जिन पर सोना चढ़वाया गया। 11 करूबों के
पंख बीस हाथ लम्बे थे। एक करूब का एक
पंख पाँच हाथ का था जिसे ईमारत की दीवार

तक पहुँचाया गया था। दूसरा पंख भी पाँच
हाथ का था और वह दूसरे करूब के पंख से
मिला हुआ था। 12 दूसरे करूब का पंख भी
पाँच हाथ था और ईमारत की दूसरी दीवार
तक पहुँचता था। दूसरा पंख पाँच हाथ का
था और पहले करूब से सटा हुआ था। 13 इन
करूबों के पंख बीस हाथ तक फैले थे। वे
अपने अपने पाँव के सहारे खड़े थे। उनका
चेहरा अन्दर की ओर था। 14 बीच वाले
पर्दे को नीले, बैजनी और लाल रंग के सन
के कपड़े से बनवाया। उसी पर करूब भी
कढ़वाए। 15 ईमारत के सामने पैंतीस -पैंतीस
हाथ ऊँचे दो खम्भे बनवाए। एक-एक के
ऊपर की कंगनी पाँच-पाँच हाथ की थी।
16 फिर अन्दर के कमरे में सांकलें बनवा
कर खम्भों के ऊपर लगाई। एक सौ अनार
बना कर सांकलों पर लटकाए गए। 17 इन
खम्भों को मन्दिर के सामने, एक दाहिनी ओर
और दूसरा बाईं ओर खड़ा करा दिया। दाहिने
खम्भे का नाम याकीन और बाएँ का बोअज़
रखा।

4 बीस हाथ की ऊँची और बीस हाथ
की चौड़ाई वाली पीतल की एक वेदी
बनवायी गयी। 2 एक हौद ढाल कर बनवाया
गया। वह दस हाथ चौड़ा था। देखने में वह
गोलाकार था। इसकी ऊँचाई पाँच हाथ और
घेरा तीस हाथ का था। 3 उसके नीचे, उसके
चारों ओर एक एक हाथ में दस -दस बैलों
की तस्वीर[a] बनायी गयीं। ये हौद को घेरे
हुए थीं। जब उसे ढाला गया, उसी समय
ये बैल ढले गए। 4 उसे बनाए गए बारह
बैलों पर रखा गया। इनमें से तीन उत्तर, तीन
पश्चिम, तीन दक्षिण और तीन पूरब की तरफ़
चेहरे किए हुए थे। उनके ऊपर हौद रखा
हुआ था। उन सभी के पिछले अंग भीतरी
हिस्से में पड़ते थे। 5 हौद की मोटाई आठ
सेन्टीमीटर की थी। उस का मोहड़ा कटोरे
के मोहड़े की तरह, सोसन के फूलों के काम
से बना था। इस हौद में तीन हज़ार रखने
की सीमा थी। 6 धोने के लिए दस हौदियाँ
बना कर पाँच बाईं तरफ़ और पाँच दाईं
तरफ़ रखीं। होमबलि की चीजें उसी में धोई
जाती थीं। 7 सोने की दस दीवट बनवा कर
मन्दिर में पाँच बाईं ओर और पाँच दाईं ओर
रखा दीं। 8 मन्दिर में ही पाँच मेज़ एक तरफ़
और पाँच दूसरी तरफ़ रखीं। सोने के एक
सौ कटोरे भी बनवाए गए। 9 पुरोहितों के
आंगन ओर बड़े आंगन को बनवाया। इस
आंगन में फ़ाटक बनवा कर उसके दरवाज़ों
को पीतल से मढ़वाया। 10 हौद को इमारत
के दाहिनी ओर अर्थात पूरब और दक्षिण
के कोने की ओर रखा। 11 हूराम ने हण्डों,
फावड़ियों और कटोरों को बनाया। उसने
उस व्यक्ति को निपटा दिया जो भवन में
काम करता था। 12 दो खम्भों और गोलों
सहित वे कंगनियाँ जो खम्भों के सिरों पर
थीं, और खम्भों के सिरों पर के गोलों को
ढाँकने के लिए जालियों की दो-दो लाईनें।
13 दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार। जो
गोले खम्भों के सिर पर थे। उनको ढाँकने
वाली एक-एक जाली के लिए अनारों की
दो-दो पक्तियाँ बनायीं। 14 इसके बाद कुर्सियाँ
और कुर्सियों के ऊपर की हौदियाँ। 15 उनके
नीचे बारह बैल। 16 फिर हूराम-अबी ने हण्डों,
फावड़ियों, काँटों और इनके सभी सामान
को प्रभु के भवन के लिए राजा सुलैमान के
आदेश से चमकते हुए पीतल के बनवाए।
17 राजा ने उसको यरदन की तराई में यानि
कि सुक्कोत ओर सरेदा के बीच चिकनी मिट्टी

[a] **4.3** मूर्तियाँ

वाली ज़मीन में ढलवाया। 18 ये सभी बर्तन
सुलैमान ने इतने बनवाए कि उनकी गिनती
मुश्किल होने लगी। 19 सभी लोग बर्तन जो
भवन के थे और वेदी 20 दीपकों सहित शुद्ध
सोने की दीवटें, जो विधि के मुताबिक अन्दर
के कमरों के सामने जला करतीं थी। 21 सोने
के फूल दीपक और चिमटे 22 शुद्ध सोने
की कैंचियाँ, कटोरे, धूपदान और कढ़ाईयाँ
बनवाईं। ईमारत के दरवाज़े और परम पवित्र
जगह के अन्दरूनी दरवाज़े और ईमारत
अर्थात मन्दिर के दरवाज़े सोने के बनाए गए।

5 इस तरह जिन कामों को करने की
सुलैमान ने ठान ली थी, वह पूरे हुए।
फिर उसने उन बर्तनों को जिन्हें उसके पिता
ने अलग किए थे, प्रभु के भवन के भण्डारों
में रखवा दिए। 2 तब सुलैमान ने इस्राएल
के बुज़ुर्गों और हर कबीले के खास -खास
आदमियों, और पितरों के घरानों के प्रधानों
को अपने पास यरूशलेम में बुलाया। यह
इसलिए कि वाचा का बक्सा दाऊदपुर से
ऊपर ले चलें। 3 सभी इस्राएली सातवें महीने
के त्यौहार के समय राजा के पास इकट्ठे हो
गए। 4 जब इस्राएल के सभी बुज़ुर्ग आ गए,
तब लेवियों ने बक्सा उठा लिया। 5 लेवीय
और पुरोहित बक्सा और मिलाप वाला तम्बू
और जितने अलग किए गए हुए बर्तन तम्बू
में थे, उन सभी को ऊपर ले गए। 6 राजा
सुलैमान और सारे इस्राएली जो इकट्ठे हुए
थे, उन्होंने बक्से के सामने इतने पशु कुर्बान
किए गए, जिन को गिनना मुश्किल था। 7 तब
पुरोहितों ने बक्सा भवन के भीतरी कमरे
में, जो परमपवित्र कहलाता है पहुँचा कर
करूबों के पंखों के नीचे रख दिया। 8 बक्से
की जगह के ऊपर करूब पंख फैलाए हुए
थे, जिस से वे ऊपर से बक्से और डंडों
को ढाँपे हुए थे। 9 डंडे लम्बे थे ओर उनके
सिरे बक्से से निकले हुए अन्दर के कमरे
के सामने दिखाई देते थे। लेकिन बाहर से
नहीं। 10 बक्से में केवल पत्थर की पटियाएँ
थी। उन्हें मूसा ने होरेब में उस समय रखा
जब मिस्र से इस्राएलियों के निकलने के बाद
प्रभु ने वाचा बान्धी थी। 11 जब पुरोहित
पवित्रस्थान से निकले 12 जितने लेवीय गाना
गाते थे, वे सभी अर्थात् बेटों - भाईयों सहित
आसाप, हेमान और यहूतून सन के कपड़े
पहने झांझ, सारंगियाँ और वीणाएँ लिए हुए
वेदी के पूर्वी अलंग में खड़े थे। उनके साथ
एक सौ बीस पुरोहित तुरहियाँ बजा रहे थे।
13 जब बजाने -गाने वाले सभी प्रभु की बड़ाई
करने लगे तब भवन में बादल छा गया।
14 बादल की वजह से पुरोहित खड़े नहीं रह
पाए, क्योंकि सारी जगह तेज से भर गयी थी।

6 सुलैमान बोला, “प्रभु परमेश्वर ने कह
दिया था, कि वह गहरे अँधेरे में रहेंगे।”
2 एक हमेशा बना रहने वाला स्थान बनाया
है जिस में आप सदा तक रहें। 3 पूरी मण्डली
को राजा ने आशीर्वाद दिया और पूरी मण्डली
खड़ी रही। 4 उसने कहा, “इस्राएल के प्रभु
की बड़ाई हो, जिस ने मेरे पिता दाऊद से
वायदा किया था और उसे पूरा भी किया।
5 उनका कहना था, “जिस दिन से मैं इस्राएल
को मिस्र की गुलामी में से लाया, तब से
किसी कबीले का कोई नगर नहीं चुना, जिस
में मेरे नाम से कोई भवन बनाया जाए। न ही
मैंने किसी आदमी को चुना कि वह मेरे लोगों
पर प्रधान हो। 6 लेकिन मैंने यरूशलेम को
इसलिए चुना है कि वहीं मेरा नाम रहे। दाऊद
को भी इसीलिए चुना कि वह मेरे लोगों की
अगुवाई करे। 7 मेरे पिताजी की यह आरज़ू
थी कि वह प्रभु के लिए एक भवन बनाएँ।

8 लेकिन प्रभु ने कहा था कि वह उसकी
कामना का आदर करते हैं, 9 लेकिन प्रभु ने
कहा कि वह बना न सकेगा, उस का बेटा
ही बना सकेगा। 10 प्रभु के शब्दों के अनुसार
बात पूरी हो गयी। और मैं दाऊद के तख्त पर
बैठा हूँ। उसी इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के
नाम पर इस भवन को बनाया गया है। 11 इस
में वाचा के बक्से को भी रख दिया है। इस
में इस्राएलियों से बान्धी गई प्रभु परमेश्वर
की वाचा है। 12 तभी सभी के देखते -देखते
उसने हाथ फैलाए। 13 सुलैमान ने पाँच हाथ
लम्बी, पाँच हाथ चौड़ी और तीन हाथ ऊँची
पीतल की एक चौकी बनवाई। उसे आंगन
में रखा गया। उसी पर वह खड़ा होकर
हाथ फैलाते और घुटने टेकते हुए कहता है,
14 "हे प्रभु, इस्राएल के प्रभु, आपकी तरह
न तो कोई आकाश[a] में है न इस पृथ्वी
पर। जो लोग अपने मन से आपको अपने
सामने जान कर जीवन जीते हैं, उनके लिए
आप अपनी वाचा को पूरा करते हैं और
तरस खाते रहते हैं। 15 आपने जो कुछ मेरे
पिता दाऊद से कहा था, उसे पूरा किया
है। 16 इसलिए अब इस बात को भी पूरा
कीजिए, कि हमारे कुल में गद्दी पर बैठने
वाला सदा तक होगा। आपने दाऊद से यह
भी कहा था कि जैसे वह आपके डर में जिया,
लोग भी जियें। 17 हे प्रभु," दाऊद को दिया
गया वायदा पूरा हो।" 18 लेकिन क्या प्रभु
सचमुच दुनिया में रहने वाले लोगों के साथ
रहेंगे, स्वर्ग और ऊँचे स्वर्ग में भी आप समाते
नहीं है। फिर मेरी बनायी गई इमारत में कैसे
समाएँगे? 19 फिर भी अपने दास की बिनती
और दोहाई पर ध्यान दीजिए। 20 आपकी,
आँखें हमेशा इस जगह पर लगी रहें और
जो दुआएँ यहाँ सी की जाएँ, आप उनका
जवाब दे। 21 अपने दास और अपने लोगों
की उन बिनतियों को आप सुन लेना, जो वे
गिड़गिड़ाकर करेंगे। आप स्वर्ग से सुन कर
उन्हें माफ़ भी कर देना। 22 किसी के खिलाफ़
जब कोई गुनाह कर बैठे और उससे यहाँ
वेदी के सामने शपथ लेने को कहा जाए,
23 तब आप इन्साफ़ करके दुष्ट को सज़ा देना
और बेगुनाह को बचा लेना। 24 यदि आपके
लोग आपके खिलाफ़ गलत करने से अपने
दुश्मन से हार जाएँ, लेकिन इस भवन में
आकर प्रार्थना करें, 25 तो आप सुन लेना,
और अपनी प्रजा इस्राएल का अपराध माफ
करना, और उन्हें इस देश में वापस लौटा
लाना, जिसको देने का आपने वायदा किया
था। 26 यदि उनके गुनाह की वजह से बरसात
न हो, लेकिन जब वे मानकर बदल जाएँ।
27 तो उनकी दोहाई सुन कर उन्हें क्षमा कर
देना और पानी बरसा देना। 28 जब आकाल,
मरी आए या टिड्डियाँ और कीड़े लगें। जब
दुश्मन उन्हें घेर ले या बीमारी आ जाए और
29 वे दुख के साथ आपको पुकारें 30 तो स्वर्ग
से सुन कर माफ़ करना, और लोगों को उनके
कामों के अनुसार बदला देना। 31 ताकि वे
पुरखाओं की दी हुयी ज़मीन पर आप से डरते
हुए अपने जीवन के दिन बिताएँ। 32 दूसरे देश
के लोग भी आपकी शौहरत सुन कर जब यहाँ
पर आकर बिनती करें। 33 तब आप उनकी
बिनती का उत्तर देना, ताकि अन्य देश के
लोग आपकी इज़्जत करें और आपकी मानें।
34,35 जब आपके लोग दुश्मन से लड़ने कहीं
भी पहुँच जाएँ लेकिन वहीं से इस दिशा में
प्रार्थना करें, आप ज़रूर जवाब देना। 36 कोई
इन्सान इस दुनिया में बेगुनाह नहीं है। यदि
उनके गुनाह के कारण आप उन्हें दुश्मन
के हवाले कर दें और 37 वे उसी हालत में

[a] **6.14** स्वर्ग

गिड़गिड़ाएँ और गलती मान लें। 38 उसी देश
में जब उनका मन बदले और वहीं से इस देश
और इस भवन की दिशा में मुँह करके प्रार्थना
करें। 39 तो आप सुन कर इन्साफ़ करना और
उनको क्षमा भी करना। 40 यहाँ पर की जाने
वाली प्रार्थना पर आपकी निगाहें लगी रहें।
आपके कान भी उनकी सुनने के लिए खुले
रहें। 41 हे प्रभु परमेश्वर अपनी सामर्थ के
बक्से सहित अपने आराम-स्थल में आएँ।
आपके पुरोहित उद्धाररूपी कपड़े पहने रहें
और आपको चाहने वाले आपकी भलाई के
कामों को याद करें और खुश रहें। 42 हे प्रभु,
अपने अभिषिक्त की बिनती को अनसुनी
मत कीजिए, आप अपने दास दाऊद केऊपर
की गई दया के काम याद रखें।

7 सुलैमान की इस प्रार्थना के बाद ऊपर
से आग गिरी और होमबलियों को जला
डाला। साथ ही भवन तेज से मर गया। 2 तेज
के कारण पुरोहित लोग प्रभु के भवन में
दाखिल न हो सके। 3 आग गिरते वक्त भवन
के ऊपर भी तेज छा गया था। सभी लोग
देखते रहे और फर्श पर झुक कर सिज़दा
किया। वे बोले," प्रभु का कृपा सदा ठहरने
वाली है। 4 तभी सारी प्रजा के साथ होकर
राजा ने प्रभु के लिए कुर्बानी की। 5 उस
दिन बाईस हज़ार बैल और एक लाख बीस
हज़ार भेड़-बकरियाँ चढ़ाई गयी। इस तरह से
प्रभु को आदर-सम्मान दिया गया। 6 पुरोहित
अपना-अपना काम करने के लिए खड़े रहे।
लेवीय गीत-संगीत में लगे रहे। पुरोहित,
तुरहियाँ बजाते रहे और सभी इस्राएली खड़े
रहे। 7 फिर सुलैमान ने प्रभु के भवन के
सामने आंगनों के बीच एक जगह पवित्र की।
उसने होमबलि और मेल-बलियों की चर्बी
वहीं चढ़ाई। 8 उसी समय हमात की घाटी
से लेकर मिस्र के नाले तक सभी इस्राएलियों
ने सुलैमान के साथ मिल कर सात दिन तक
त्यौहार मनाया। 9 आठवें दिन महासभा रखी
गई। सात दिन वेदी को इज़्जत दी सात और
दिन त्यौहारों को भी मनाया। 10 सुलैमान ने
उन सभी को सातवें महीने के तेईसवें दिन
को जाने दिया। उनके ऊपर और इस्राएल
पर जो प्रभु की कृपा थी, उसके लिए वे
खुश थे। 11 सुलैमान प्रभु के भवन को जैसा
बनाना चाहता था, वैसा हो सका। 12 रात
में प्रभु ने सुलैमान को दर्शन देकर, बातचीत
करते हुए कहा, "मैने तुम्हारी याचना सुनी
है और इस जगह को यज्ञ के लिए कबूल
किया है। 13 यदि मैं पानी न बरसने दूँ, टिड्डियों
को देश उजाड़ने दूँ या मरी आने दूँ 14 तब
यदि मेरे लोग, नम्र होकर प्रार्थना करें, मेरी
मौजूदगी की चाहत रखें। यदि वे अपनी बुरी
चाल से मुड़ जाएँ तो मैं उनके अपराध को
माफ़ करूँगा और उनका देश वैसा ही कर
दूँगा, जैसा था। 15 आज के बाद से इस
जगह से दुआएँ की जाएँगी, उसकी ओर मेरी
आँखें और कान लगे रहेंगे। 16 मैंने इस भवन
को अपनाया है और अलग भी किया है,
ताकि यहाँ मेरा नाम हमेशा के लिए बना रहे।
मेरी आँखें और मन दोनों यही लगे रहेंगे।
17 यदि तुम अपना जीवन दाऊद की तरह
बिताओ, मेरी आज्ञाओं को मानो तथा बतायी
गई विधियों और नियमों के अनुसार करते
रहो, 18 तो मैं तुम्हारे राजासन को बना रहने
दूँगा। ऐसा इसलिए कि क्योंकि मैंने तुम्हारे
पिता दाऊद से वायदा किया था कि, तुम्हारे
परिवार[a] में शासन करने वाला सदा कोई न
कोई होगा। 19 लेकिन मेरी कही हुई बातों से
यदि तुम पीछे हट जाओ और दूसरे देवताओं

[a] 7.18 वंश

का भजन -कीर्तन करने लगो, 20 तो मैं अपने
लोगों को तित्तर-बितर कर दूँगा। और इसी
भवन को तुच्छ जानूँगा। दूसरे देशों में तब
उन लोगों की बदनामी होगी। 21 इस ईमारत
के आस-पास से आने-जाने वाले लोग आश्चर्य
से पूछेंगे, “प्रभु परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया
?” 22 तब लोग कहेंगे, “जो प्रभु इनके पूर्वजों
को मिस्र की गुलामी से छुड़ा कर बाहर लाए
थे, उन्हें इन लोगों ने छोड़ दिया। सच्चे प्रभु
की जगह ये लोग देवी-देवताओं को पूजने
लगे है। इसीलिए इन लोगों पर यह मुसीबत
आ पड़ी है।

8 बीस साल में सुलैमान प्रभु के भवन
को बना पाया था। 2 हूराम ने जो नगर
सुलैमान को दिए थे, वहाँ पर सुलैमान ने
इस्राएलियों को बसा दिया था। 3 इसके बाद
उसने सोबा के हमात को जीत लिया। 4 जंगल
के तदमोर और हमात के सभी भण्डारों को
मज़बूत किया। 5 ऊपर और नीचे वाले दोनों
बेथोरोन को शहरपनाह और फ़ाटकों और
बेढ़ों से मज़बूत बनाया। 6 बालात को और
सुलैमान के भण्डार नगरों और उनके रथों
और सवारों के जितने नगर थे, उनको और
जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और
अपने राज्य के सब देश में बनाना चाहा,
उन सभी को बनाया। 7 हित्तियों, एमोरियों,
परिज्जियों हिब्बियों और यबूसियों के बचे
हुए लोग जो इस्राएल के नहीं थे, 8 उनके
वंश जो बाद में देश में बच गए थे और
जिन को इस्राएलियों ने मार नहीं डाला था,
उनमें से कितनों को सुलैमान ने बेगार में रखा
था। 9 लेकिन इस्राएलियों में से सुलैमान ने
अपने काम के लिए किसी को गुलाम नहीं
बनाया था। वे लोग उनके रथों तथा सवारों
के ऊपर अधिकारी थे। 10 और सुलैमान ने
सरदारों के प्रधान जो लोगों पर अधिकार
रखते थे, गिनती में ढाई सौ थे। 11 फिर
सुलैमान फिरौन की बेटी को दाऊदपुर से
उस जगह लाया जहाँ उसके लिए निवास
बनाया गया था। वह बोला, “जिस जिस
जगह प्रभु का बक्सा आया है, वह खास है।
इसलिए मेरी रानी इस्राएल के राजा दाऊद
के भवन में न रह सकेगी। 12 तब उसने
ओसारे के आगे बनाई गई वेदी पर होम बलि
चढ़ाई। 13 मूसा के आदेश और हर दिन की
ज़रूरत के मुताबिक विश्राम दिन, नए चाँद
और हर साल तीन बार ठहराए हुए त्यौहारों
जैसे अखमीरी रोटी के त्यौहार, अठवारों के
त्यौहार और झोपड़ियों के त्यौहार में कुर्बानी
किया करता था। 14 उसने अपने पिता दाऊद
के नियम के अनुसार पुरोहितों की सेवा
के लिए उनके झुण्ड बनाए। लेवियों को
उनका काम दे दिया। हर दिन की ज़रूरत
के अनुसार वे प्रभु की बड़ाई और पुरोहितों
की सेवा करते रहे। एक -एक फ़ाटक के पास
चौकीदारों को भी झुण्ड-झुण्ड बना कर रख
दिया। 15 किसी भी आदेश को राजा ने टाला
नहीं। 16 नींव डालने से लेकर पूरा करने तक
सब काम ठीक हुआ। 17 तब सुलैमान एस्योन
गेबेर और एलोत गया, जो एदोम के देश में
समुद्र के किनारे है। 18 उसके पास हूराम ने
अपने जहाज़ियों के द्वारा जहाज़ और समुद्र
के जानकार मल्लाह भेजे। उन्होंने सुलैमान के
जहाज़ियों के साथ ओपीर जाकर साढ़े चार
सौ किक्कार सोना सुलैमान को लाकर दिया।

9 शीबा की रानी ने सुलैमान की शौहरत
सुन रखी थी। वह मुश्किल सवालों को
उससे पूछने यरूशलेम के लिए चल पड़ी।
उसके साथ बहुत से लोग तो थे ही, साथ
में, मसाले, सोना, मणि आदि ऊँट पर लायी।

सुलैमान से उसने कई एक कठिन सवाल
पूछे। 2 सुलैमान ने उस सभी का जवाब दिया।
3 रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी, उस का
भवन और मेज़ पर रखा खाना देखा। 4 उसके
कर्मचारियों का उठना-बैठना, कपड़े पहनने,
उसके दूसरे काम करने वालों को देख कर
वह बहुत प्रभावित हुई। 5 मैंने जो कुछ तुम्हारे
बारे में सुना था, वह सभी सही है।'लेकिन
जो कुछ मुझे बताया गया था वह तो बहुत
ही कम था। 6,7 जो लोग तुम्हारे साथ रह कर
अक्लमन्दी की बातें सुनते हैं, वे आशीषित
हैं। 8 उस प्रभु की बड़ाई हो, जो तुम से खुश
हैं कि तुम्हें गद्दी पर बैठाए और तुम राज्य
करो। अपने प्रेम के कारण प्रभु इस्राएल को
मज़बूत करना चाहते थे। इसीलिए ईमानदारी
और सच्चाई से राज्य करने के लिए तुम्हें राजा
बना दिया। 9 रानी ने राजा को एक सौ बीस
किक्कार सोना, इत्र और मणि दिया। ये इत्र
कभी देखने में नहीं आए थे। 10 हूराम और
सुलैमान दोनों के जहाज़ी ओपीर से सोना,
चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाया करते
थे। 11 चन्दन की लकड़ी से प्रभु के भवन
राजभवन के लिए चबूतरे और गाने वालों के
लिए वीणाएँ तथा सारंगियाँ बनवायीं । ये भी
चीजें अपने आप में अनूठी थीं। 12 रानी ने
जो कुछ चाहा, राजा ने दिया। जो वह लायी
थी उससे अधिक सुलैमान ने दिया। इसके
बाद वह अपने देश लौट गयी। 13 जो सोना
सुलैमान को हर साल मिलता था, उस का
वज़न छैः सौ छियासठ किक्कार था। 14 यह
सौदागरों और व्यापारियों द्वारा लाए गए सोने
से ज़्यादा हुआ करता था। अरब देश के सभी
राजा और गवर्नर सोना चान्दी लाया करते
थे। 15 इस सोने से दो सौ ढालें बनवायी गईं।
एक -एक ढाल में छैः छै सौ शेकेल सोना
लगा था। 16 फिर सोना गढ़ कर तीन सौ
छोटी ढालें बनवायीं। एक -एक छोटी ढाल
में तीन सौ शेकेल सोना इस्तेमाल हुआ। इन्हें
लबानोनी बन नामक ईमारत में रखा गया।
17 हाथी दाँत का एक राजासन बना कर उसे
शुद्ध सोने से मढ़ दिया। 18 उस राजासन में छैः
सीढ़ियाँ और सोने का एक पायदान था। ये
सभी राजासन से जुड़े थे। बैठने की जगह की
दोनों अलंग टेक लगी थी। 19 छहों सीढ़ियों
की दोनों अलंग में एक एक शेर खड़ा हुआ
बनाया गया। कुल मिला कर वे सब बारह
थे। ऐसा किसी भी राज्य में कभी नहीं सुना
गया था। 20 राजा सुलैमान के पीने के सभी
बर्तन सोने के थे। लबानोनी बन नामक भवन
के सभी बर्तन शुद्ध सोने के थे। चाँदी तो
असीमित थी। 21 हूराम के जहाज़ियों के साथ
राजा तर्शीश को जाने वाले जहाज़ थे। तीन
साल के बाद वे तर्शीश के जहाज़ सोना,
चान्दी, हाथी दाँत आदि लाते थे। 22 इस
तरह धन-दौलत और बुद्धि ज्ञान में सुलैमान
राजा अपने समय के सभी राजाओं में आगे
था। 23 दुनिया के सभी राजा उसके ज्ञान की
बातों को सुनने के लिए उससे मिलना मांगते
थे। 24 हर साल सोने -चान्दी के बर्तन घोड़े
-खच्चर, इत्र और कपड़े तथा हथियार ये लोग
लाया करते थे। 25 अपने घोड़ों -रथों के लिए
चार हज़ार थान और बारह हज़ार सवार थे।
इनको उसने रथों के नगरों में और यरूशलेम
में राजा के पास रखा। 26 सुलैमान का राज्य
महानद से लेकर पलिश्तियों के देश और
मिस्र की सरहद तक के सभी राजाओं के वह
ऊर था। 27 सब चीजों की इतनी अधिकता
हो गयी कि यरूशलेम में चान्दी की कीमत
पत्थरों की सी और देवदार की गूलर के पेड़ों
की तरह हो गयी। 28 मिस्र और दूसरे देशों से
लोग सुलैमान के लिए घोड़े लाया करते थे।
29 सुलैमान के सभी कामों का वर्णन नातान,

नबी की किताब में है। शीलोवासी अहिय्याह और नबात के बेटे यारोबाम के बारे में इद्दो नबी की किताब में भी है। 30 इस्राएल पर यरूशलेम में रह कर सुलैमान ने चालीस साल तक शासन किया। 31 उसके मरने पर दाऊदपुर में उसे दफ़ना दिया गया। उस का बेटा रहूबियाम उसकी जगह राजा बना।

10 इसलिए कि सभी इस्राएली उसे राजा बनाने वाले थे, रहूबियाम शेकेम गया। 2 नबात के बेटे यारोबाम को यह बात मालूम हो गई और वह मिस्र से वापस लौट आया। 3,4 तब लोगों ने उसे बुलवाया। इसलिए यारोबाम और इस्राएली रहूबियाम से कहने लगे, “तुम्हारे पिता ने हमारे ऊपर भारी बोझ रखा था, इसलिए अब तुम उसे कम कर दो, तब हम तुम्हारे नीचे रहना पसन्द करेंगे। 5 वह बोला,” तुम लोग मेरे पास तीन दिन बाद आओ, फिर देखेंगे। 6 तब रहूबियाम ने सुलैमान के समय के बुज़ुर्गो से सलाह ली। 7 उनका कहना था, ‘’ यदि तुम इन लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करके खुश रखो, तो वे लोग हमेशा तुम्हारे शासन को पसन्द करेंगे।” 8 रहूबियाम ने बुज़ुर्गो की सलाह की जगह अपने साथ बड़े हुए जवानों की सलाह से काम लिया। 9 उन जवान लोगों से उसने पूछा कि वह इस्राएलियों को क्या जवाब दे। 10 जवान लोग बोले,“कि तुम उन से कहो कि मेरी छंगुली मेरे पिता की कमर से भी मोटी हैं। 11 जो बोझ मेरे पिता ने तुम पर रखा था, उस से ज़्यादा मैं रखूँगा। वह कोड़े मार कर तुम्हें सज़ा देता था, लेकिन मैं तुम्हें बिच्छुओं से कटवाऊँगा। 12 तीसरे दिन यारोबाम और लोग रहूबियाम के पास पहुँचे। 13 राजा उन लोगों के साथ सख्ती से पेश आया। 14 जवानों की सलाह के अनुसार वह बोला,” मैं तुम्हारे बोझ को बढ़ा दूँगा। कोड़ों की जगह मैं बिच्छुओं का इस्तेमाल करूँगा।” 15 इस तरह राजा ने प्रजा की इच्छा की परवाह नहीं कि अहिय्याह ने जो नबूवत यारोबाम से कही थी, वह इसी तरह पूरी होने वाली थी। 16 यह देख कर कि राजा उनकी सुनने के लिए तैयार नहीं है, वे बोले, “हमारा सुलैमान के बेटे से क्या लेना-देना इस्त्रालियों अपने-अपने घर जाओ। 17 तब सभी लोग अपने -अपने तम्बू में चले गए। यहूदा के नगरों में जितने इस्राएली रहा करते थे, उन्हीं पर रहूबियाम राज्य करता रहा। 18 तब रहूबियाम ने हदोराम को जिसे सभी बेगारों के ऊपर ज़िम्मेदारी मिली थी, भेज दिया। इस्राएलियों ने उस पर पत्थर फेंक कर मार मार डाला। इसके बाद जल्दी से रथ पर चढ़ कर यरूशलेम भाग गया। 19 इस तरह इस्राएल दाऊद के घराने से दूर ले गया।

11 रहूबियाम जब यरूशलेम आया, तब यहूदा और बिन्यामीन के वंश के एक लाख, अस्सी हज़ार अच्छे फ़ौजियों को इकट्ठा किया। वह इस्राएल के साथ लड़कर अपने अधिकार में करना चाहता था। 2 तब शमायाह के पास प्रभु ने संदेश दिया, 3 यह कि यहूदा के राजा सुलैमान के बेटे और यहूदा तथा बिन्यामीन के सभी लोगों से कहो, 4 “प्रभु का कहना यह है कि तुम अपने भाईयों से मत लड़ो। जो कुछ हुआ है वह मेरी अनुमति से है, इसलिए हर एक आदमी वापस घर लौट जाए। इसलिए यारोबाम पर बिना हमले किए वे सभी वापस लौट गए। 5 रहूबियाम यहूदा ही में रहने लगा और वहीं के नगरों को मज़बूत करने लगा। 6 इन नगरों का नाम था : बेतलेहम एताम, तकोआ 7 बेतसूर सोको, अदुल्लाम। 8 गत,

मारेशा, जीप। 9 अदोरैम, लाकीश, अजेका।
10 सोरा, अय्यालोन और हेब्रोन जो यहूदा
और बिन्यामीन में है, मज़बूत किया। 11 उसने
नगरों के ऊपर मुखिया भी रखे। उसने खाने
की चीजें, तेल और दाखमधु भी रखवा दिए।
12 फिर एक-एक नगर में उसने ढाले और
भाले रखवा कर उनको और भी मज़बूत
किया। यहूदा और बिन्यामीन तो पहले ही
से उसके थे। 13 पूरे इस्राएल के पुरोहित और
लेवीय उसके पास पहुँचे। 14 लेवीय अपनी
चरागाहों और ज़मीन को छोड़कर यरूशलेम
आए, क्योंकि यारोबाम और उसके बेटों ने
उन्हें निकाल दिया था, ताकि वे प्रभु के लिए
पुरोहित की ज़िम्मेदारी न निभाएँ। 15 उसने
ऊँचे स्थानों, बकरों और बनाए हुए बछड़ों के
लिए अपनी तरफ़ से पुरोहित रखे। 16 लेवियों
के बाद इस्राएल के सभी कबीलों में से जितने
अपने दिल से इस्राएल के चाहने वाले थे,
वे अपने बुज़ुर्गो के प्रभु के लिए कुर्बानी
चढ़ाने के लिए यरूशलेम आए। 17 उन लोगों
ने यहूदा के राज्य को स्थिर कर दिया।
सुलैमान के बेटे रहूबियाम को तीन साल तक
मज़बूत किया। तीन साल तक वे सही जीवन
जीते रहे। 18 रहूबियाम ने एक महिला से
विवाह किया जिस का पिता दाऊद का बेटा
यरीमोत और माता यिशै के बेटे एलीआब की
बेटी अबीहैल थी, 19 उस से यूश, शमर्याह
और जाहम नामक बेटे पैदा हुए। 20 उसके
बाद उसने अबशालोम की नातिनी माका
से विवाह किया। उनके जो पुत्र हुए थे, वे
थे अबिय्याह, अत्ते, जीजाा और शलोमीत।
21 रहूबियाम की अठ्ठारह रानियाँ थी। उसके
आठ रखैल भी थीं। उसके अठ्ठाईस बेटे और
साठ बेटियाँ हुईं। अबशालोम की नातिनी
माका को वह अपनी सभी रानियों और
रखेलियों से ज़्यादा चाहता था। 22 रहूबियाम
ने माका के बेटे अबिय्याह को खास और
सभी भाईयों में बड़ा इसलिए ठहरा दिया,
ताकि उसे राजा बनाया जाए। 23 वह बहुत
समझदारी से सब काम किया करता था।
उसने अपने सभी बेटों को अलग अलग
किया। उसने उन्हें यहूदा और बिन्यामीन के
सभी देशों के नगरों में रखा। उन्हें खाने-पीने
की चीज़ों की कोई कमी नहीं थी। उसने
उनके लिए पत्नियों का भी इन्तज़ाम किया।

12 जब रहूबियाम काफी बढ़ गया
तब उसने और पूरे इस्राएल ने प्रभु
परमेश्वर के नियम-आज्ञाओं को मानना
छोड़ दिया। 2 उनके इस कदम की वजह
से रहूबियाम के शासन के पाँचवे साल में
मिस्र के राजा शीशक ने 3 बारह सौ रथ,
साठ हज़ार सवार लिए हुए यरूशलेम पर
हमला बोल दिया। शीशक के साथ लूबी,
सुक्कियी और कूशी भी बड़ी गिनती में उसके
साथ आए थे। 4 उसने यहूदा के मज़बूत नगरों
को हथिया लिया और यरूशलेम तक पहुँच
गया। 5 तब शमायाह नामक यहूदा के गर्वनरों
और रहूबियाम से बोला,"प्रभु का कहना
यह है कि तुम लोगों ने उन्हें त्याग दिया है,
इसलिए मैं यह सब होने दे रहा हूँ। 6 तब
उन सभी ने अपनी गलती मान ली। उन्होंने
कहा, "प्रभु न्यायी हैं।" 7 उनके इस रवैये को
देख कर प्रभु का संदेश शमायाह के पास
आया, "इसलिए कि उन्होंने अपनी गलती
मानी है, मैं उन्हें बर्बाद नहीं करूँगा मैं उन्हें
बर्बाद न करूँगा। मेरा गुस्सा शीशक के द्वारा
यरूशलेम पर भड़केगा नहीं। 8 लेकिन इसके
बावजूद वे उसके वश ही में होंगे, जिस से
मेरी और देश-देश के राज्यों की सेवा को भी
जान सकें। 9 इसके बाद शीशक का हमला
यरूशलेम पर हो गया और वह राजमहल

की कीमती चीज़ों को अपने साथ ले गया। सुलैमान द्वारा बनायी गयी फरियों को भी वह ले गया। 10 उन सोने की ढालों की जगह रहूबियाम ने पीतल की ढाले बनवायी। उसने उन्हें चौकीदारों के प्रधानों के सुपुर्द कर दिया। 11 जब जब राजा प्रभु के भवन में जाया करता था, वे पहरेदार उन्हें उठा कर ले चलते थे। और फिर लौटा कर रख दिया करते थे। 12 रहूबियाम के दीन हो जाने पर प्रभु का गुस्सा ठण्डा हो गया। इसलिए उसको पूरी तरह से बर्बाद नहीं किया। 13 इस तरह वह यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसकी उम्र राजा बनने के समय इकतालीस थी। उसने सत्रह साल तक राज्य किया उसकी माँ का नाम नामा था, जो अम्मोनी थी। 14 वह ठीक चाल नहीं चली। उस का लगाव प्रभु से न था। 15 शुरू से आखिर तक उसके काम शमायाह नबी और इद्दो दर्शी की किताबों में हैं। रहूबियाम और यारोबाम हमेशा लड़ते रहे। 16 उसके मरने के बाद उसे दाऊदपुर में दफ़नाया गया। अबिय्याह, उस का बेटा उसकी जगह राजा बना।

13 यारोबाम के अठारहवें साल में अबिय्याह यहूदा पर राज्य करने लगा। 2 वह तीन साल तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसकी माँ का नाम मीकायाह था, जो गिबा के रहने वाले ऊीएल की बेटी थी। अबिय्याह और यारोबाम के बीच युद्ध हुआ। 3 अबिय्याह ने चार लाख बढ़िया लड़ाकुओं की पक्तिं बनाई ओर यारोबाम आठ लाख बहादुर आदमियों को लेकर खड़ा हो गया।। 4 एप्रैम के पहाड़ी इलाके में समारैम नामक पहाड़ पर अबिय्याह बोला, “हे यारोबाम और इस्राएलियों सुनो, 5 क्या तुम्हें मालूम नहीं, लोन वाली वाचा बान्ध कर प्रभु ने दाऊद और उसके वंश को इस्राएल का राज्य हमेशा के लिए दे दिया है। 6 फिर भी नबात का बेटा यारोबाम अपने स्वामी के खिलाफ़ हो गया। 7 उसने फ़ालतू लोगों को अपनी तरफ़ कर लिया है। जब रहूबियाम छोटा और अबोध ही था, तभी यारोबाम लोग मज़बूत हो गए थे। 8 क्या तुम्हारा ख्याल है कि हम प्रभु के राज्य का मुकाबला कर सकेंगे। 9 क्या तुमने प्रभु परमेश्वर के पुरोहितों को अर्थात हारून की सन्तान और लेवियों को मिला कर देश-देश के लोगों की तरह पुरोहित नहीं ठहराए ? जो व्यक्ति एक बछड़ा और सात मेंढ़े अपना संस्कार कराने को ले आता, तो उनका पुरोहित हो जाता है, जो प्रभु नहीं है। 10 लेकिन हमारे प्रभु परमेश्वर हैं। हम ने उन्हें छोड़ा नहीं है। हमारे पास पुरोहित और लेवीय है जो सेवा किया करते है। 11 हर रोज़ सुबह-शाम होमबलि और खुशबू पदार्थ जलाते हैं वे साफ़ मेज़ पर कुर्बानी[a] की रोटी सजाते और सोने की दीवट और उसके दीपक शाम को जलाते हैं। 12 हमारे साथ प्रभु हमारे आगे चलते है। उनके पुरोहित तुम्हारे खिलाफ़, तुम्हीं फूँकने के लिए हमारे संग है। हे इस्राएलियों अपने पूर्वजों के प्रभु के साथ झगड़ा मत करो, तुम कामयाब नहीं हो जाओगे। 13 लेकिन यारोबाम ने छिप कर मारने वालों को उन लोगों के पीछे भेजा। 14 जैसे ही यहूदियों ने पीछे मुड़ कर देखा, तो पाया कि आये और पीछे युद्ध होगा। तुरन्त उन्होंने प्रभु को पुकारा और तुरहियाँ फूँकी जाने लगी। 15 तभी यहूदी आदमी लोग स्तुति करने लगे। फिर प्रभु ने अबिय्याह और यहूदा के सामने यारोबाम और इस्राएलियों को मार। 16 इस्राएली लोग

[a] **13.11** भेंट

यहूदा के सामने से भाग खड़े हुए। प्रभु ने
उन्हें हरा दिया। 17 अबिय्याह और उसके
लोगों ने उनकी कसकर पिटायी कर डाली।
18 उस समय इस्राएलियों को हार माननी
पड़ी। यहूदियों के जीतने की वजह यह थी
कि उन्होंने प्रभु पर भरोसा किया था। 19 फिर
अबिय्याह ने यारोबाम को दौड़ाया और
जबरन बेतेल, यशाना और एप्रोन के नगर व
गाँव हथिया लिए। 20 अबिय्याह के जीवन
काल में फिर कमी यारोबाम ताकतवर नहीं
हुआ। आखिर में प्रभु परमेश्वर ने उसे मार ही
डाला। 21 अबिय्याह की ताकत बढ़ती गई।
उसने चौदह पत्नियाँ कर लीं। उसके बाईस
बेटे और सोलह बेटियाँ हुई। 22 अबिय्याह के
कामों का और चरित्र का लेखा-जोखा इद्दो
नबी की किताब में है।

14 अहिय्याह को दाऊदपुर में मिट्टी
दी गई। उसकी जगह उस का
बेटा तख्त पर बैठा। उसके शासन में दस
साल तक शान्ति थी। 2 आसा ने प्रभु की
इच्छा के अनुसार जीवन बिताया। 3 दूसरे
देवी-देवताओं की वेदियों को उसने हटा
दिया[a] 4 उस का आदेश थाः बुज़ुर्गो के प्रभु
का भजन -कीर्तन करें और दिए गए नियम
-आज्ञाओं के आधार पर जिएँ। 5 यहूदा के
सभी नगरों से और ऊँची जगहों से सूरज की
मूर्तियों को जहाँ भी यहूदा में थीं, मिटा दिया।
6 यहूदा में आसा ने मज़बूत नगर बसाए,
क्योंकि देश में सुकून था। उन सालों में
उसकी लड़ाई किसी से न हुयी थी। 7 यहूदियों
से आसा बोला, "आओ हम इन नगरों को
बसा ले। उनके चारों ओर दीवार किला और
फ़ाटकों के बेड़े बनाएँ। हम ने प्रभु की बात
मानी है, इसलिए उन्होंने हमें चारों ओर से
आराम दिया है।" यह बात मानकर लोगों ने
सहयोग दिया। 8 आसा के पास ढाल और
बर्छों वाली एक फ़ौज थी। यहूदा में से तीन
लाख आदमी, बिन्यामीन में से ढाल रखने
वाले और धनुष-बाण चलाने वाले दो लाख
अस्सी हज़ार थे। 9 उनके खिलाफ़ दस लाख
की सेना और तीन सौ रथ लिए हुए जेरह
नाम का एक कूशी निकल कर मारेशा तक
आया। 10 उस का मुकाबला करने आसा चल
पड़ा। 11 उसने प्रार्थना भी की, "प्रभु, जैसे
आप शक्तिशाली की मदद कर सकते हैं, वैसे
ही कमज़ोर की भी कर सकते है। हमारी मदद
कीजिए। हम आप पर ही भरोसा रखे हुए है।
आप से कोई जीत नहीं सकता । 12 इसके
बाद ही प्रभु ने कूशियों को हताहत किया
और वे भाग खड़े हुए। 13 गरार तक उन लोगों
का पीछा किया गया। बहुत से कूश उस
दिन खत्म हो गए। यहूदी लूट भी अपने साथ
ले गए। 14 गरार के आस-पास के नगरों पर
भी उन्होंने अपना दबदबा बना लिया। लोगों
के मन में प्रभु का डर समा गया। वहाँ के
धन दौलत को भी लूट लिया गया। 15 जहाँ
जानवर रखे जाते थे, वहाँ से भेड़-बकरियाँ
और ऊँट लूटकर लोग यरूशलेम को वापस
आए।

15 प्रभु का आत्मा ओदेद के बेटे
अजर्याह पर उतरा। 2 आसा से वह
मिला और कहा,"जब तक तुम और तुम्हारे
लोग प्रभु की सुनते हुए जिएँगे, प्रभु की
मौजूदगी तुम्हारे साथ होगी। यदि तुम लोग
उन्हें छोड़ दोगे, तो वह भी तुम्हें छोड़ देंगे।
3 इस्राएल काफ़ी समय तक बिना सच्चे प्रभु
और बिना सिखाने वाले याजक तथा नियम
आज्ञाओं के रहा था। 4 लेकिन जब -जब

[a] **14.3** मूरतों को तोड़ डाला

मुसीबत में उन्होंने प्रभु को पुकारा, तब-तब
उनको मदद मिली। 5 उस समय किसी तरह
की शान्ति नहीं थी। 6 देश देश और नगर से
नगर चूर किए जाते थे, क्योंकि प्रभु तरह
तरह की पीड़ा देकर उन्हें घबरा देते थे।
7 हिम्मत रखो, काम करो, तुम्हारी मेहनत
का फल तुम्हें मिलेगा। 8 ओदेद की नबूवत
सुनने के बाद आसा को हिम्मत मिली। उसने
अपने राज्य के सभी हिस्सों से घिनौनी चीजें
हटा दी। उसने प्रभु की वेदी को नए तरीके
से बनाया। 9 यहूदा और बिन्यामीन, एप्रैम,
मनश्शे और शिमोन में से जो लोग उसके साथ
रहते थे, उन्हें एक जगह बुलाया। क्योंकि
बहुत से लोग उसके साथ प्रभु की मौजूदगी
की वजह से, इस्राएल में से उसके पास आ
गए थे। 10 आसा के राज्य के पन्द्रहवें साल
के तीसरे महीने में वे यरूशलेम में इकट्ठा हुए।
11 उन्होंने उस लूट में से जो वे लाए थे सात
सौ बैल, सात हज़ार भेड़ बकरियाँ, कुर्बान
की। 12 उन्होंने वायदा किया कि जीवित प्रभु
ही को मानेंगे। 13 यह भी कि उस इन्सान को
चाहे वह छोटा-बड़ा, महिला-पुरुष कोई भी
हो, यदि वह प्रभु परमेश्वर ही की उपासना
करे, उसे जान से हाथ धोना पड़ेगा। 14 ऊँची
आवाज़ करके स्तुति की और तुरही बजाकर
उन्होंने वायदा किया। 15 सभी लोग बहुत
खुश थे। सभी ने पूरे मन से प्रतिज्ञा की थी। वे
सभी प्रभु को मन से मानते भी रहे। इसलिए
प्रभु ने उन्हें चारों तरफ़ से शान्ति दी। 16 आसा
की माँ माका ने एक घिनौनी मूरत बना ली
थी। आसा ने माँ को राज-माता के औहदे से
हटा दिया। उसकी मूरत को पीस कर किद्रोन
नाले में फूँक दिया। 17 हालांकि ऊँचे स्थानों
को तोड़ा तो नहीं गया था, फिर भी आसा का
मन प्रभु की ओर था। 18 सोने, चान्दी के जो
बर्तन उसने और उसके पिता ने अर्पण किए
थे, उन सभी का उसने प्रभु के घर पर पहुँचा
दिए। 19 राजा आसा के राज्य के पैंतीसवे
साल तक युद्ध नहीं हुआ।

16 आसा के राज्य के छत्तीसवें वर्ष
में इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा
पर हमला कर दिया। उसने रामा को दृढ़
इसलिए किया, कि यहूदा के राजा आसा
के पास कोई आ-जा न सके। 2 आसा ने
प्रभु के भवन और राजमहल के भण्डारों में
से सोना -चान्दी निकाल कर दमिश्कवासी
अराम के राजा बेन्हदद के पास लोग भेज कर
कहा, 3 “जिस तरह से मेरे-तुम्हारे पिता के
बीच वैसे ही मेरे-तुम्हारे बीच भी एक सहमति
हो। मैं तुम्हारे लिए सोना-चाँदी भेज रहा हूँ।
तुम इस्राएल के राजा के साथ की अपनी
वाचा को तोड़ दो। 4 बेन्हदद ने यह बात
मान ली। उसने इस्राएली नगरों पर हमला
भी बोल दिया। उसने इय्योन, दान, अबेल्मैम
और नप्ताली के सभी भण्डार वाले नगरों
पर जीत हासिल कर ली। 5 बाशा ने जब
यह सुना, तो रामा को बढ़ाना रोक दिया।
6 तब राजा आसा ने यहूदा के लोगों को
साथ में लिया। उसने बाशा राजा के पत्थरों
और लकड़ियों को ले लिया। उन्हीं चीज़ों से
उसने मिस्पा और गेबा को मज़बूत किया।
7 हनानी दर्शी एक दिन आसा के पास गया
और बोला,“तुमने प्रभु परमेश्वर पर भरोसा
रखने के बजाए अराम के राजा का सहारा
लिया है, इसलिए अराम की फ़ौज तुम्हारे
हाथ से बच गई है। 8 कूशी और लूबी फ़ौज
भी तो बड़ी थी उसमें बहुत से रथ और सवार
थे। इसके बावजूद तुमने जीत हासिल की
थी, क्योंकि तुम्हारा विश्वास प्रभु परमेश्वर
पर था। 9 देखो प्रभु की आँखें सारी दुनिया
में घूमती रहती हैं, ताकि जो सच्चे मन से

उन्हें चाहते है, वह उनकी मदद कर सकें।
तुमने बेवकूफ़ी कर डाली है। इसलिए आज
के बाद से तुम लड़कियों में फँसे रहोगे।
10 आसा को दर्शी पर गुस्सा आ गया और
उसे लकड़ी में ठुकवा दिया। उसी समय से
आसा कुछ लोगों को दबाव में भी रखने
लगा। 11 इस्राएल के राजाओं की किताब में
उसके कामों का ब्यौरा है। 12 उसके शासन
के उन्तीसवें साल में उसके पैर में कुछ
बीमारी हो गयी। प्रभु पर भरोसा रखने के
बताए वह डॉक्टरों की मदद पर ही टिक
गया। 13 अपने राज्य के इकतालीसवें साल
में वह इस दुनिया से चल बसा। 14 दाऊदपुर
ही में उसे मिट्टी दी गई।

17 उस का बेटा यहोशापात उसकी
जगह राजा बन गया। उसने भी
इस्राएल के विरोध में अपनी ताकत बढ़ायी।
2 यहूदा के जितने मज़बूत नगर थे,वहाँ
सिपाहियों के झुण्ड रखे। उसने यहूदा के
नगरों ओर एप्रैम के उन नगरों में भी जो उसके
पिता ने ले लिए थे, सिपाहियों की चौकियाँ
बनायीं। 3 इसलिए कि यहोशापात का चरित्र
दाऊद का सा था, प्रभु की नज़दीकी का
एहसास वह करता रहा। बाआल देवता से
उसे कुछ लेना-देना नहीं था। 4 उसके जीवन
का मकसद था प्रभु के दिए आदेशों को
मानना। 5 इसलिए प्रभु ने उसके हाथों को
मज़बूत किया। यहूदी लोग उसे ईनाम दिया
करते थे, इसलिए उसकी दौलत ओर शौहरत
दोनों बढ़ते गए। 6 प्रभु के रास्ते पर चलते
-चलते वह खुश रहा। तभी उसने यहूदा से
ऊँची जगहों को और अशेरा मूर्तियों को
हटा दिया। 7 अपने राज्य के तीसरे साल में
बेन्हैल, ओबद्याह, ज़कर्याह, नतनेल और
मीका नाम के गवर्नरों को यहूदा के नगरों
में सिखाने को भेजे। 8 उसके साथ शमायाह,
नतन्याह, जबद्याह, असाहेल, शमीरामोत,
अदोनिय्याह, तोबिय्याह और तोबदोनिय्याह
नाम लेवीय और उनके साथ एलीशामा और
यरोहाम नाम के पुरोहित थे। 9 प्रभु की
पुस्तक से इन लोगों ने सिखाया। 10 यहूदा
के आस-पास के सारे देशों के लोगों में प्रभु
का ऐसा डर आ गया, किसी ने यहोशापात
से युद्ध करने की हिम्मत तक नहीं की।
11 तमाम पलिश्ती यहोशापात के पास ईनाम
और चान्दी लाए। अरब के लोग भी सात
हज़ार सात सौ मेंढ़े और सात हज़ार सात
सौ बकरे लाए। 12 इस तरह यहोशापात
तरक्की करता गया। उसने यहूदा में किले
और भण्डार के नगर बनवाए। 13 यहूदा
के नगरों में उस का बहुत काम हुआ
करता था। यरूशलेम में उसके फ़ौजी रहा
करते थे। 14 इनके पितरों के कुटुम्ब के
मुताबिक इनकी यह संख्या थीः प्रधान
अदना, जिस के साथ तीन लाख बहादुर
जवान थे। 15 यहोहानान, जिस के साथ तीन
लाख ताकतवर लोग थे। 16 जिक्री का बेटा
अमस्याह के साथ दो लाख 17 बिन्यामीन
में से एल्यादा नामक शूरवीर था, जिस के
पास दो लाख धनुष-बाण चलाने वाले थे।
18 उसके नीचे यहोजाबाद था, जिस के साथ
लड़ाई के लिए एक लाख अस्सी हज़ार लोग
थे। 19 ये राजा की सेवा में लगे थे। ये उन से
अलग थे, जिन्हें राजा ने सारे यहूदा के किले
वाले नगरों में ठहराया था।

18 यहोशापात दौलतमन्द और मशहूर
हो गया। उसने आहाब के साथ
समधियाना भी किया। 2 कुछ साल बाद वह
आहाब से मिलने शोमरोन गया। आहाब ने
वहाँ उसके लिए एक बड़ी दावत की। फिर

उसने गिलाद रामोत पर हमला करने के
लिए उसे उकसाया। 3 आहाब यहोशापात
से बोला," क्या तुम मेरे साथ गिलाद के
रामोत पर चढ़ाई करोगे।" उसने जवाब
दिया, "जैसे तुम हो मैं हूँ और जैसे तुम्हारे
लोग, वैसे मेरे, हम लोग ज़रूर युद्ध में साथ
देंगे।" 4,5 फिर यहोशापात बोला, "प्रभु की
इच्छा पहले जानो।" तब इस्राएल के राजा
आहाब ने चार सौ नबियों को बुलाकर
पूछा,"क्या गिलाद के रामोत पर हम हमला
बोल दें या इन्तज़ार करे?" वे बोले, "कर
दो, क्योंकि जीत तुम्हारी हो लेगी।" 6 लेकिन
यहोशापात बोल उठा, '' क्या यहाँ प्रभु का
कोई और नबी नहीं है, जिस से हम पूँछ
सकें ?" 7 इस्राएल का राजा बोला, हाँ एक
है, उससे भी हम पूछ सकते हैं। लेकिन मैं
उसे पसन्द नहीं करता हूँ। वह मेरे लिए कभी
भी अच्छी भविष्यवाणी नहीं करता है। वह
मेरे नुक्सान की ही बात करता है। उस का
नाम मीकायाह है। यहोशापात ने कहा,"राजा
ऐसा न बोले।" 8 तब राजा ने मीकायाह को
बुलवाया 9 आहाब और यहोशापात, दोनों ही
अपने-अपने शाही कपड़े पहने राजासन पर
बैठे। वे शोमरोन में खुली जगह में बैठे थे।
नबी लोग नबूवत कर रहे थे। 10 तब कनाना
का बेटा सिदकिय्याह ने लोहे के सींग बनवा
कर कहा, "प्रभु के वचन यह है कि तुम
अरामियों को इस से मारते-मारते तुम खत्म
कर डालोगे। 11 सभी नबियों ने युद्ध में जाने के
लिए कहा और यह भी कि हम जीत जाएँगे।
12 जो दूत मीकायाह को बुलाकर लाया था
उसने मीकायाह से कहा,"सभी नबी एक सी
बात कर रहे है, तुम उन ही की तरह कहना
13 मीकायाह ने जवाब में कहा," जो कुछ
प्रभु कहे, मैं वहीं कहूँगा।" 14 जब वह राजा
के पास आया, तब उसने पूछा कि हमला
किया जाए या नहीं। उसने कहा, "हमला कर
दो।" 15 राजा बोला,"मैं तुम से बहुत बार
कहा है कि तुम मुझ से सच बोला करो।"
16 मीका ने कहा, "पूरा इस्राएल देश मुझे ऐसी
भेड़-बकरियों की तरह दिखा, जिन का कोई
देख-रेख करने वाला न हो । यह भी कि प्रभु ने
कहा कि वे लोग अनाथ हैं। इसलिए अच्छा
यह होगा कि हर एक अपने घर चला जाए।
17 तब आहाब, यहोशापात से कहने लगा,
"देखो, मैंने कहा था न, कि मीकायाह मेरे
बारे में कभी भी अच्छी बातें नहीं कहता है
?" 18 मीकायाह बोला," सुनो, मैंने राजासन
पर बैठे प्रभु और उनके दाएँ-बाएँ स्वर्ग की
फ़ौज को देखा।" 19 तब प्रभु ने सवाल किया,
"कौन इस्राएल के राजा आहाब को कौन
भरमाएगा, कि वह गिलाद के रामोत पर
चढ़ाई करे और हार जाए।" उस समय किसी
ने चूँ-चाँ नहीं की। 20 फिर एक आत्मा ने
आकर कहा, "मैं करूँगी।" 21 प्रभु ने पूछा,
"यह तुम किस तरह करोगी ?" वह बोली,
"मैं नबियों के अन्दर बैठ जाऊँगी।" प्रभु
ने कहा, "जाओ और कामयाब हो जाओ।
22 इसलिए सुना, प्रभु ने इन नबियों के मुँह
में झूठ बोलने वाली आत्मा आने दी है और
प्रभु ने तुम्हारे नुकसान ही की बात कही
है। 23 तभी कनाना के बेटे सिदकिय्याह ने
मीकायाह के गाल पर थप्पड़ मारते हुए कहा,
"प्रभु का आत्मा मुझे छोड़कर क्या तुम से
बात करने गया?" 24 मीकायाह बोला,"जिस
दिन डर कर तुम छिपते-छिपते भागोगे, उस
दिन तुम्हें मालूम पड़ेगा।" 25 इस पर इस्राएल
के राजा ने कहा, कि मीकायाह को नगर
के गवर्नर आमोन और राजकुमार योआश
के पास लौटकर, 26 उन से कहो, राजा का
कहना है, कि इसको जेल में डाल दो,और
मैं जब तक कुशल से वापस न लौटूँ, तब

तक इसे दुख की रोटी देते रहना। 27 तब
मीकायाह बोला, यदि आप भले चंगे वापस
लौट आएँ, तो समझ लेना कि प्रभु ने मेरे
ज़रिये कुछ नहीं कहा। फिर उसने कहा, हे
लोगो, तुम सभी सुनो। 28 तब इस्राएल के
राजा और यहूदा के राजा यहोशापात दोनों
ने गिलाद पर हमला बोल दिया। 29 और
इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "
मैं भेष बदलकर युद्ध में जाऊँगा, लेकिन तुम
अपने कपड़े ही पहनकर जाना। इस्राएल के
राजा ने भेष बदल लिया और वे दोनों युद्ध
में गए। 30 अराम के राजा ने अपने रथों के
प्रधानों को यह आदेश दिया था, कि न तो
छोटे से लड़ना, न बड़े से, केवल इस्राएल
के राजा पर निशाना साधना। 31 इसलिए जब
रथों के प्रधानों ने यहोशापात को देखा, तो
कहा इस्राएका राजा वही है, और वे उसी पर
वार करने मुड़े।इस पर यहोशापात चिल्ला
पड़ा और याहवे ने उसकी मदद की। और
परमेश्वर ने उनको उसके पास से मुड़ जाने
की प्रेरणा दी। 32 इसलिए यह देखकर कि
वह इस्राएल का राजा नहीं है रथों के प्रधान
ने उसका पीछा करना छोड़ दिया। 33 तब
किसी अनदाज़ से एक तीर छोड़ा, और
वह इस्राए के राजा की झिलम और निचले
पहरावे के बीच छेदकर लग गया, तब उसने
अपने सारथी से कहा, “ मैं ज़ख्मी हो गया
हूँ, इसलिए लगाम फेरकर मुझे फ़ौज से बाहर
ले चलो। 34 उस दिन युद्ध घमासान होता गया
और इस्राएल का राजा शाम तक अपने रथ में
अरामियों के सामने खड़ा रहा, लेकिन सूरज
डूबते- डूबते वह मर गया।

19 यहूदा का राजा यहोशापात वापस
यरूशलेम अपने भवन को लौट
गया। 2 तब हनानी नामक हर्शी का बेटा येहू
यहोशापात से मिलने आया और कहा,” बुरे
लोगों की मदद करना और प्रभु के दुश्मनों
से प्रेम करना चाहिए” इसी वजह से प्रभु
तुम से गुस्सा है। 3 फिर भी तुम्हारे में कुछ
अच्छी बातें हैं। तुमने अशेरा को मूर्तियों को
बर्बाद किया और मात्र प्रभु की वन्दना की।
4 हालांकि यहोशापात यरूशलेम में रहता था,
उसने बेर्शेबा से एप्रैम के पहाड़ी स्थानों तक
लोगों के मन प्रभु की ओर मोड़ दिया। 5 फिर
उसने यहूदा के एक गढ़ वाले नगर में जज
रखा। 6 जजों से उसने कहा, “सोचो तुम जब
इन्साफ़ करते हो, तो वह प्रभु के लिए करते
हो, और प्रभु की मौजूदगी तुम्हारे साथ होगी।
7 तुम प्रभु से डरना। ध्यान से ज़िम्मेवारी को
पूरा करना। प्रभु में कुछ बुराई नहीं है। वह
किसी की तरफ़दारी नहीं करते और न ही
रिश्वत लेते हैं। 8 यहोशापात ने यरूशलेम में
भी कुछ पुरोहितों और खास-खास लोगों
को इन्साफ़ करने और मुकदमों की जाँच
करने के लिए ठहराया। 9 वे लोग यरूशलेम
लौट गए। उसने उन्हें आदेश दिया कि प्रभु
से डरते हुए, सच्चाई और बिना कपट मन
से ऐसा करना। 10 तुम्हारे भाई जब मुकदमा
लाते है, चाहे खून का हो या किसी और
बारे में, तुम चेतावनी देना कि प्रभु के सामने
अपराधी न ठहरें। कही ऐसा न हों कि प्रभु
की ओर से सज़ा मिले। तब तुम गुनाहगार
नहीं ठहरोगे। 11 देखो, प्रभु के बारे में सभी
मुकदमें में अमर्याह पुरोहित और राजा के
बारे में सभी मुकदमों में यहूदा के परिवार का
मुखिया इश्माएल का बेटा जबद्याह तुम्हारे
ऊपर ऑफ़िसर है। लेवीय तुम्हारे सरदारों का
काम करेंगे। भले इन्सान के साथ प्रभु की
उपस्थिति होगी।

20 इसके बाद मोआबियों और
अम्मोनियों ने और मूनियों ने
यहोशापात पर हमला बोल दिया। 2 तब
लोगों ने यहोशापात को खबर दी, ‘‘ ताल
के उस पार एदोम देश की ओर से एक बड़ा
झुण्ड तुम पर हमला कर रहा हैं यह झुण्ड
एनगदी तक पहुँच चुका है।” 3 यह सुनते ही
यहोशापात का पसीना छूटने लगा और प्रभु
की तरफ़ ध्यान गया। उसने सभी से उपवास
रखने को कहा। 4 यहूदी लोग प्रभु से मदद
पाने के लिए एक जगह इकट्ठे हो गए।
यहूदा के सभी नगरों में उन्होंने ऐसा किया।
5,6 प्रभु के भवन में आंगन में यहोशापात
आकर कहने लगा, हे हमारे बापदादों के
प्रभु, क्या आप स्वर्ग के अधिकारी नहीं है
? क्या सभी राष्ट्र आपके नीचे नहीं है ?
क्या आपकी ताकत का मुकाबला कोई
कर सकता है? 7 क्या आपने इस देश के
रहने वाले लोगों को निकाल कर हमेशा के
लिए अपने दोस्त अब्राहम को नहीं दिया था
? 8 वे लोग उस में बस गए। यहाँ उन्होंने
आपके लिए एक जगह अलग की और
कहा 9 यदि तलवार या मरी या आकाल या
किसी और मुसीबत के समय जब हम इस
जगह से निवेदन करेंगे, तो आप सुन कर
बचा लेंगे। 10 अभी ऐसा है, कि अम्मोनी
और मोआबी लोग मिल गए हैं। 11 आप ही
देखिये, ये ज़मीन आप ही ने हमें दी है और
ये लोग हम को बेदखल करना मांगते है।
12 हे प्रभु क्या आप इन्साफ़ नहीं करें ?
इतनी बड़ी भीड़ के सामने हम क्या हैं ? हम
क्या करें यह भी हमें समझ में नहीं आ रहा
है। हम लोग आपकी तरफ़ ही देख रहे हैं।
13 अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ यहूदी
लोग खड़े रहे। 14 फिर आसाप के वंश का
एक यहजीएल नामक एक लेवीय था। वह
ज़कर्याह को बेटा, बनायाह का पोता और
मनन्याह के बेटे योएल का परपोता था।
उस पर प्रभु का आत्मा उतरा। 15 वह बोला,
“हे राजा और प्रजा, प्रभु का कहना यह
है कि इस बड़ी भीड़ से डरने की ज़रूरत
नहीं हैं। यह लड़ाई तुम्हारी नहीं प्रभु की है।
16 कल तुम लोग मुकाबला करने जाना।
वे लोग तुम्हें यरूएल नामक जंगल के
साम्हने नाले के पास मिलेंगे। 17 इस युद्ध
में तुम्हें नहीं लड़ना है। तुम लोग इन्तज़ार
करना कि प्रभु तुम्हें कैसे बचाते हैं। न तुम
लोग डरना, न घबराना। उनका मुकाबला
करना, प्रभु तुम्हारे साथ हैं। 18 ज़मीन की
ओर यहोशापात ने अपना सिर झुकाया
और सभी लोगों ने भी वैसा किया। 19 तभी
कहातियों और कोरहियों में से कुछ लेवीय
खड़े हो गए और ऊँची आवाज़ में प्रभु की
बड़ाई करने लगे। 20 सुबह-सुबह वे सभी
तको के जंगल की दिशा में चल पड़े । तभी
यहोशापात राजा बोला,”प्रभु पर भरोसा
रखो तब तुम बने रहोगे। उनके नबियों की
सुन कर करो, सफ़लता मिलेगी। 21 फिर
उसने सलाह मशविरा करके हथियारबन्दों
के सामने चलने के लिए लोगों को अलग
किया। उन्हें प्रभु की दया और तरस के लिए
प्रभु की बड़ाई करनी थी। 22 जिस समय वे
गीत गाने लगे, प्रभु ने उन लोगों के खिलाफ़
जो यहूदा के विरोध में आ रहे थे। छुप कर
मारने वालों को लगा दिया और वे मारे भी
गए। 23 ये अम्मोनी और मोआबी डराने और
बर्बाद करने आ रहे थे। सेईर पहाड़ के
रहने वालों को जब वे मार चुके, तब एक
दूसरे को मारने लगे। 24 इसलिए जब यहूदी
जंगल में चौकी पहुँच, तो उस भीड़ की ओर
निगाह डाली। वहाँ केवल लाशें ही लाशें
थी। 25 तब यहोशापात और उसकी प्रजा

लूट लेने चले । वहाँ उन्हें गहने और धन
मिला। गहने ले जाना उन्हें मुश्किल लगा।
साथ ही लूट इकट्ठा करते -करते तीन दिन
हो गए। 26 चौथे दिन बराका तराई में इकट्ठे
होकर उन लोगों ने प्रभु को धन्यवाद दिया।
इसीलिए इसका नाम बराका की तराई
पड़ा। 27 तब यहूदा और यरूशलेम नगर के
सभी आदमी और उनके आगे यहोशापात,
आनन्द के साथ यरूशलेम लौट आए,
क्योंकि यहवे ने उन्हें दुश्मनों पर अनन्दित
किय था। 28 इसलिए वे सारंगियाँ, वीणाएँ
और तुरहियाँ बजाते हुए यरुशलेम में प्रभु
के भवन को आए। 29 जब देश- देश के
सभी राज्यों को मालूम पड़ा कि इस्राएल
के दुश्मनों से प्रभु लड़े, तब उनके मन में
प्रभु का डर आ गया। 30 और यहोशापात के
राज्य को सुकून मिला, क्योंकि परमेश्वर ने
उसे चारों ओर से शान्ति दी। 31 इस तरह
से यहोशापात ने यहूदा पर शासन किया,
पैंतीस साल की उम्र में उसने राज्य शुरु
किया था और पच्चीस साल तक यरुशलेम
पर राज्य करता रहा। उसी माँ का नाम
अजूबा था। अजूबा शिल्हो की बेटी थी।
32 यहोशापात अपने पिता के रास्ते पर
चलता रहा और प्रभु की बताई राह पर
बना रहा, 33 लेकिन ऊँचे स्थान वैसे ही
बने रहे, उन्हें हटाया नहीं गया और लोगों
ने अपना मन सच्चे परमेश्वर की ओर न
लगाया। 34 शुरु से आखिर तक यहोशापात
के और काम, हनानी के बेटे की किताब
में हैं, जिसके बारे में इस्राएल के राजाओं
की पुस्तक में लिखा है। 35 इसके बाद
यहूदा के राजा यहोशापात ने इस्राएल के
दुष्ट राजा अहज्याह से दोस्ती कर ली।
36 उसने ऐसा इसलिए किया,ताकि तर्शीश
जाने के लिए जहाज बनवाए,और उन्होंने
ऐसे जहाज एस्योन-गेबेर में बनवाए। 37 तब
दोदावाह के बेटे मारेशवासी एलीआजर ने
यहोशापात के खिलाफ़ यह नबूवत की, "
तुमने जो अहज्याह से मेल कर लिया है,
इसलिए प्रभु तुम्हारी बनवाई हुई वस्तुओं
को तोड़ डालेंगे।" इसलिए जहाज टूट गए
और तर्शीश न जा पाए।

21 एक दिन आया, जब यहोशापात का
देहान्त हो गया और उसकी जगह
उस का बेटा यहोराम राज्य करने लगा।
2 यहोराम के भाईयों के नाम थे : अजर्याह,
यहीएल, ज़कर्याह, मीकाएल और शपत्याह।
3 इनके पिता ने इन्हें चान्दी, सोना कीमती
चीज़ें, ईनाम और बढ़िया-बढ़िया नगर दिए।
केवल यहोराम को राज्य की बागडोर सौंपी,
क्योंकि वह उम्र में सब से बड़ा था। 4 लेकिन
उसने सभी भाईयों को और कुछ गवर्नरों को
मौत के घाट उतार दिया। 5 राजा बनने के
समय यहोराम की उम्र बत्तीस साल थी। उसने
आठ साल राज्य किया। 6 जैसी ज़िन्दगी
इस्राएल के राजा जिया करते थे, उस का
जीवन वैसा ही था। आहाब के परिवार का
सा चालचलन उस का भी था। आहाब की
बेटी उसकी पत्नी थी। जो प्रभु को पसन्द नहीं
था, वह किया करता था। 7 इसके बावजूद
प्रभु दाऊद के घराने को बर्बाद नहीं करना
चाहते थे। ऐसा उन शब्दों[a] के कारण था,
जो प्रभु और दाऊद के बीच के थे। 8 उन्हीं
दिनों में एदोम यहूदा की अधीनता से निकल
गया और अपने लिए दूसरा राजा कर लिया।
9 यहोराम ने अपने साथ गवर्नरों और रथों
को लिया और जाकर धावा बोल दिया।
उनके रथों के मुखिया लोगों को उसने मार

[a] **21.7** वाचा

डाला। 10 इस तरह से एदोम यहूदा के साथ
न रहा। तभी लिब्ना भी यहूदा से अलग
हो गया। यह सभी इसलिए हुआ क्योंकि
यहोराम ने जीवित प्रभु को छोड़ दिया था।
11 उसने यहूदा के पहाड़ों पर पूजा की जगह
बनायी और लोगों से कह मूर्तिपूजा का गुनाह
करवा कर बहका दिया। 12 तब एलिय्याह
भविष्यवाणी ने उसे एक चिट्ठी लिखी।
जिस में लिखा था, तुम न तो यहोशापात
और न ही आसा का सा जीवन जी रहे
हो। 13 तुम्हारा जीवन इस्राएल के राजाओं
जैसा है। तुमने आहाब के परिवार की
तरह यहूदियों और यरूशलेम के नागरिकों
से मूर्तिपूजा करवायी है। 14 इसलिए प्रभु
तुम्हारे लोगों को सज़ा देंगे और दौलत को
बर्बाद करेंगे। 15 तुम अतड़ियों की बीमारी
से कमज़ोर होते जाओगे। 16 फिर प्रभु ने
यहोराम के खिलाफ़ पलिश्तियों, कूशियों
और अरबियों को उभारा। 17 उन लोगों ने
यहूदा पर हमला कर दिया। वे लोग दौलत,
बेटों और महिलाओं को लूट ले गए। उसके
सब से छोटे यहोआहाज को छोड़ वहाँ उसके
पास और कोई न बचा। 18 इसके बाद ही
वह बेइलाज अतंड़ियों की बीमारी के कारण
बीमार हो गया। 19 दो साल बाद उसी रोग
से उसकी मौत हो गई। लोगों ने उसके लिए
किसी भी तरह की खुशबूदार -पदार्थो को
न जलाया। 20 बत्तीस साल की उम्र में वह
राज्य करने लगा। यरूशलेम में उसने आठ
साल राज्य किया। राजाओं के कब्रिस्तान के
बजाए उसे दाऊदपुर में गाड़ दिया गया।

22 फिर यरूशलेम के लोगों ने उसके
सब से छोटे बेटे को राजा बना
दिया। जो झुण्ड अरबियों के साथ छावनी में
आया था, उसने उसके सभी बड़े बेटों को मार
डाला था, इसलिए यहूदा के राजा यहोराम
का बेटा अहज्याह राजा बना। 2 उसकी उम्र
उस वक्त बयालीस साल थी उसने यरूशलेम
में एक ही साल शासन किया। उसकी माँ
का नाम अतल्याह था। 3 इस व्यक्ति का
चालचलन आहाब राजा की तरह था। वह
अपनी माँ ही की सुनता था। 4 आहाब के
खानदान की तरह वह प्रभु की इच्छा के
खिलाफ़ ही काम किया करता था। उसके
सलाहकार ठीक नहीं थे। 5 वह आहाब के
बेटे यहोराम के साथ गिलाद के रामोत में
अराम के राजा एजाएल से युद्ध करने गया
था। अरामियों ने यहोराम को ज़ख्मी कर
दिया था। 6 इसलिए यहोराम वापस चला
गया, ताकि यिज्रेल में अपना इलाज करवाए।
यहूदा के राजा का बेटा अहज्याह उसे देखने
गया। 7 अहज्याह की बर्बादी प्रभु की ही
तरफ़ से थी, क्योंकि वह यहोराम के पास
गया। जब वहा वहाँ पहुँचा, तब यहोराम
के साथ निमशी के बेटे येहू का मुकाबला
करने को चल पड़ा। उसको प्रभु ने इसलिए
अभिषेक किया था, कि वह आहाब के
कुनबे को बर्बाद करे। 8 जब येहू आहाब
के परिवार को सज़ा दे रहा था, तब उसे
यहूदा के गवर्नर और अहज्याह के भतीजे जो
अहज्याह की सेवा किया करते थे, मिले और
उसने उन्हें मार डाला। 9 तब उसने अहज्याह
को ढूँढा, जो शोमरोन में छिप गया था,
लेकिन पकड़ा गया। उसे येहू के पास पहुँचा
कर मार भी डाला गया। उसके बारे में यह
बात फैली कि वह यहोशापात का परपोता
था जो प्रभु को चाहता था। 10 अतल्याह ने
यह देखा कि अहिज्याह की मौत हो चुकी है,
यहूदा के घराने के सभी लोगों की जान ले
ली। 11 यहोशापात राजा की बेटी थी। उसने
अहज्याह के बेटे योआश को घात होने वाले

राजकुमारों के बीच में से चुरा कर दाई सहित
बिछौना रखने के कमरे में छिपा रखा था। इस
तरह यहोराम राजा की बेटी यहोशावत, जो
यहोयादा पुरोहित की पत्नी और अहज्याह
की बहन थी, उसने योआश को अतल्याह से
ऐसा छिपा लिया था, कि वह उसकी जान न
ले सके। 12 उसके पास वह प्रभु के भवन में
छैः साल तक छिपा रहा।

23 सातवें साल में यहोयादा ने हिम्मत
करके यरोहाम के बेटे अजर्याह
यहोहानान के बेटे इश्माएल, ओबेद के बेटे
अजर्याह, अदायाह के बेटे मासेयाह और
जिक्री के बेटे एलीशापात से वाचा बान्धी।
2 फिर वे यहूदा में जगह-जगह जाकर सभी
नगरों में से लेवियों को और इस्राएल के
पितरों के परिवारों के खास-खास आदमियों
को इकट्ठा किया और उन्हें यरूशलेम लाए।
3 सभी लोगों ने मिल कर प्रभु के घर में
राजा से वायदा किया। यहोयादा उन से
बोला,"सुनो, यह राजकुमार राज्य करेगा
और यह बात प्रभु ने दाऊद के वंश के बारे
में कही थी। 4 तुम लोग पुरोहितों, लेवियों
का एक तिहाई चौकीदारी का काम करें।
5 एक तिहाई राजमहल में और एक तिहाई
नेंव के फ़ाटक के पास रहे। सभी लोग प्रभु
के भवन के आंगनों में रहें। 6 पुरोहितों और
सेवा करने वाले लेवियों के अलावा और
कोई प्रभु के भवन के अन्दर न दाखिल हो,
क्योंकि वे अलग किए गए हैं। सभी लोग
भवन पर निगरानी रखें। 7 लेवीय लोग अपने
हाथों में हथियार लेकर राजा के चारों तरफ़
रहें। यदि कोई इन्सान भवन में घुसेगा, तो
उसे मार डाला जाएगा। राजा के आने-जाने के
साथ तुम्हें साथ ही में रहना है।" 8 यहोयादा
पुरोहित ने ये आदेश दिए और पुरोहितों तथा
लेवियों ने वैसा ही किया। उन्होंने विश्राम
दिन को आने वाले और विश्राम दिन को
जाने वाले दोनों दलों के अपने -अपने जनों
को अपने साथ कर लिया, क्योंकि यहोयादा
पुरोहित ने किसी दल के लेवियों को विदाई
नहीं दी थी। 9 इसके बाद यहोयादा पुरोहित
ने शतपतियों को दाऊद राजा के बर्छे, भाले
और ढालें दीं। 10 तब उसने सभी को हाथों
में हथियार लिए ईमारत के दक्षिण कोने से
लेकर उत्तरी कोने तक वेदी और इमारत
के पास राजा की चारों तरफ़ उसकी आड़
करके रख दिया। 11 तब वे राजकुमार को
बाहर लाए। उसके सिर पर ताज रखा और
नियमशास्त्र दिया। यहोयादा और उसके बेटों
ने उसे अभिषेक किया। लोग चिल्ला उठे,
'' राजा जीवित रहे।" 12 अतल्याह ने यह
सब हल्ला-गुल्ला सुना और प्रभु के भवन में
गई। 13 उसने देखा कि दरवाज़े के पास राजा
खड़ा है। वही प्रधान और तुरही बजाने वाले
भी हैं। सब खुश हैं और गाना-बजाना हो
रहा है। तभी उसने अपने, कपड़े फाड़े और
चिल्लाई,"राजद्रोह, राजद्रोह" 14 तब यहोयादा
पुरोहित ने दल के अधिकारी शतपतियों
को बाहर लाकर उन से कहा,"उसे अपनी
पांतियों के बीच में से निकाल ले जाओ।
जो व्यक्ति उसके पीछे जाए, उसे तलवार
से मारा जाए। पुरोहित बोला, "उसे प्रभु के
भवन ही में ही मार डालो"। 15 तब उन्होंने
दोनों ओर से उसको जगह दी। वह राजभवन
के घोड़ा फ़ाटक दरवाज़े तक गई और वहीं
उसे मार दिया। 16 तब यहोयादा ने अपने और
सभी लोगों के और राजा के बीच प्रभु की
प्रजा होने की वाचा बन्धाई। 17 तभी सभी
गए और बाआल की ईमारत को गिरा दिया।
उसकी वेदियों और मूरतों को तोड़ा, साथ ही
बाआल के पुजारी को भी मौत के घाट उतार

डाला। 18 तब यहोयादा ने प्रभु के भवन की
सेवा के लिए उन लेवियों-पुरोहितों को अलग
किया, जिन्हें दाऊद ने प्रभु के भवन पर झुण्ड
-झुण्ड बना कर इसलिए ठहराया ताकि वे
होमबलि चढ़ाएँ और खुशी से गाएँ। 19 भवन
के फ़ाटकों पर चौकीदारों को इसलिए रखा,
ताकि अशुद्ध लोग अन्दर न जा सके। 20 और
वह शतपतियों, अमीरों, प्रजा को संभालने
वाले और देश के सभी लोगों को साथ लेकर
राजा को प्रभु के भवन से नीचे ले गया। फिर
ऊँचे फ़ाटक से होकर राजमहल में आया और
राजा को सिहासन पर बैठा दिया। 21 इन
सभी के बाद लोगों में खुशी की लहर फैल
गयीं तभी से वहाँ बड़ी शान्ति भी हो गयी।
अतल्याह का कत्ल भी कर दिया गया।

24 जब योआश राजा बना, तब उसकी
उम्र सात साल की थी। उसने
यरूशलेम में चालीस साल तक राज्य किया।
उसकी माँ का नाम सिब्या था। 2 यहोयादा
पुरोहित जब तक ज़िन्दा, तब तक योआश
का चाल-चलन सही था। 3 योआश की दो
पत्नियाँ थीं और बेटे - बेटियाँ भी 4 प्रभु के
भवन को ठीक ठाक करने का विचार उसके
मन में आया। 5 उसने पुरोहितों और लेवियों
को बुलाकर कहा, '' हर साल जगह जगह
जाकर पैसा इकट्ठा करो। तभी हम प्रभु के
घर की मरम्मत कर पाएँगे। लेकिन लेवीय
इस काम में आलसी हो गए। 6 तब राजा
ने यहोयादा महापुरोहित को बुला कर इस
सुस्ती का कारण पूछा। 7 दुष्ट अतल्याह के
बेटों ने प्रभु के भवन को तोड़ दिया था और
प्रभु के भवन की चीजें बाआल देवताओं को
दे दी थीं। 8 राजा की आशा से एक बक्सा
बनवा कर फ़ाटक के बाहर रखा गया। 9 तब
यहूदा और यरूशलेम में यह खबर दी गई
कि जो निर्देष जंगल में मूसा ने दान के बारे
में दिया था, उसके अनुसार पैसा दो। 10 तब
गवर्नर और सभी दूसरे लोग बक्से में तब
तक पैसा डालते गए जब तक पूरा न हुआ।
11 भर जाने पर उसे खाली करके फिर वहीं
रख दिया जाता था। इस तरह से काफ़ी धन
इकट्ठा हो गया। 12 तब राजा और यहोयादा
ने वह रकम कारीगरों को काम पर लगाने
के लिए इस्तेमाल की। 13 काम पूरा हुआ
और सभी तरह के सुधार किए गए। 14 बचे
हुए पैसे का इस्तेमाल बर्तनों को खरीदने में
किया गया। यहोयादा के ज़िन्दा रहने तक
हर दिन होमबलि चढ़ाए जाते थे। 15 काफी
बूढ़ा होने पर यहोयादा चल बसा उस समय
वह एक सौ तीस वर्ष का था। 16 दाऊदपुर ही
में उसे दफ़ना दिया गया। 17 उसके मर जाने
के बाद, गर्वनर लोग राजा के पास गए और
अपने निवेदन को सामने रखा, जिसे उसने
मान भी लिया। 18 कुछ समय बाद ये लोग
अशेरा की इबादत करने लगे, जिस से प्रभु
का गुस्सा भड़क गया। 19 प्रभु ने उनके पास
नबी भेजे, लेकिन उन्होंने सुनने से इन्कार
किया। 20 प्रभु का आत्मा यहोयादा पुरोहित
के बेटे अजर्याह पर उतरा और उसने प्रभु
का सन्देश सुना डाला," तुम क्यों प्रभु के
आदेशों को नहीं मानते हो ?" ऐसा करना
तुम्हारे लाभ का नहीं है। इसलिए कि तुमने
प्रभु को छोड़ दूसरे देवी-देवताओं को अपना
लिया है, उन्होंने तुम्हें छोड़ दिया है। 21 तब
लोग एका करके राजा के खिलाफ़ होकर
पत्थरवाह करने लगे। 22 योआश राजा ने
यहोयादा के बेटे को मार डाला। 23 नए साल
की शुरूआत में अरामियों ने उस पर हमला
कर दिया। उन लोगों ने सभी गवर्नरों को
मौत के घाट उतारा। सारा धन लूट कर
दमिश्क के राजा के पास भेज दिया। 24 वे

लोग संख्या में कम थे, लेकिन प्रभु ने एक
बड़ी फ़ौज उनके हाथ कर दी। ऐसा इसलिए
क्योंकि उन्होंने अपने पूर्वजों के प्रभु को
त्याग दिया था। उन्होंने योहाश को भी सज़ा
दी। 25 वे उसे बीमार हालत में छोड़ गए
थे। उसके कर्मचारियों ने यहोयादा पुरोहित
के बेटों के खून के कारण उस से बलवा
किया और उसके बिस्तर पर ही उसे मार
डाला। दाऊदपुर ही में उसे मिट्टी दी गयी।
26 बलवा करने वाले अम्मोनिन, शिमात का
बेटा जाबाद, शिम्रित और मोआबिन का बेटा
यहोजाबाद था। 27 उसके बेटों के बारे में और
उसके खिलाफ़ बड़ी सज़ा की भविष्यवाणी
हुयी। ये सभी कुछ राजाओं की किताबों में
लिखा हुआ है। उसके बाद उस का बेटा
अमस्याह राजा बना।

25 पच्चीस साल की आयु में वह राज्य
करने लगा। उसने उन्तीस वर्ष
यरूशलेम में राज्य किया। उसकी माँ का
नाम यहोअद्दान था जो यरूशलेम ही की
थी। 2 जो प्रभु की निगाह में ठीक था, उसने
वही किया, लेकिन अच्छे मन से नहीं।
3 राज्य की बागडोर उसके हाथ में आने
से उसने उन कर्मचारियों को मार डाला,
जो उसके पिता की हत्या में शामिल थे।
4 उनके परिवार को उसने छोड़ दिया था।
ऐसा इसलिए क्योंकि मूसा के नियम-कानून
में लिखा था कि जिस ने गुनाह किया हो,
उसे सज़ा मिले। पिता के गुनाह के लिए पुत्र
या पुत्र के गुनाह के लिए पिता को सज़ा
नहीं मिलेगी। 5 अमस्याह ने सभी यहूदियों
और बिन्यामीनियों को बुलाया। बुज़ुर्गों के
कुटुम्ब के आधार पर उसने सहस्त्रपतियों
और शतपतियों के अधिकार में रखा। उन
में से जितनों की उम्र बीस साल की या उस
से ज़्यादा थी, उनकी गिनती की। तीन लाख
भाला चलाने वाले और ढाल उठाने वाले
वीर अलग किए गए। 6 फिर उसने एक लाख
इस्राएली बहादुर पुरुषों को एक सौ किक्कार
चाँदी देकर बुलवाया। 7 प्रभु का एक जन
आया, और बोला, “हे राजा, अपने साथ
इस्राएल की फ़ौज को मत ले जाओ। क्योंकि
प्रभु उनके साथ नहीं है। 8 यदि तुम बहादुरी
दिखाओ और लड़ो भी, तब भी दुश्मन के
सामने तुम्हें मुँह की खानी होगी। प्रभु मदद
कर भी सकते हैं और हरा भी सकते हैं।
9 अमस्याह ने उस से सवाल किया, “मैं तो
सौ किक्कार चाँदी इस्राएलियों को दे चुका हूँ,
उस का क्या होगा ? प्रभु का जन बोला,“प्रभु
तुम्हें इस से कही अधिक दे सकते हैं।”
10 तब अमस्याह ने उन्हें अर्थात उस दल को
जो एप्रैम की ओर से उसके पास आया था,
अलग किया, ताकि वे वापस चले जाएँ।
तब वे यहूदियों पर आग बबूला हो गए। वे
वापस चले भी गए। 11 अमस्याह ने हिम्मत
बांधी लोगों के साथ जाकर लोन की तराई
में दस हज़ार सेईरियों को खत्म कर डाला।
12 यहूदी लोग दस ज़ार लोगों को गुलाम
बना कर भी ले गए। वहाँ उन्हें चट्टान से
गिरा कर मार डाला। 13 उस दल के आदमी
जिन्हें अमस्याह ने वापस कर दिया था कि वे
लड़ाई में साथ में न आएँ, शोमरोन से बेथरोन
तक यहूदा के सभी नगरों पर टूट पड़े। उस
दिन उनके तीन हज़ार निवासी मारे गए तथा
ढेर सारी लूट ले ली। 14 सिदोनियों को मार
कर जब अमस्याह लौटा, तब उसने सेईरियों
के देवताओं को लाकर अपने देवता करके
खड़ा किया। वह उन्हीं के सामने सिर झुकाने
और धूप जलाने लगा। 15 तभी प्रभु का गुस्सा
अमस्याह पर भड़का। उसके पास एक नबी
भेजा गया। उसने कहा, “जो देवता अपने

लोगों को बचा न पाए, उस पर भरोसा क्यों
रखना ?" 16 तभी उस से पूछा,"तुम हमारे
राज मन्त्री कब से बन गए? चुप रह जाओ।
क्या तुम्हें पिटाई चाहिए ? वह नबी खामोश
हो गया लेकिन उस से पहले बोला," मेरी
सलाह तुमने नहीं मानी और प्रभु तुम्हें बर्बाद
कर देंगे। 17 तब यहूदा के राजा अमस्याह
ने सलाह लेकर, इस्राएल के राजा के पास
जो येहू का पोता यहोआहाज का बेटा था,
यह संदेश दिया,"आओ, हम एक दूसरे का
मुकाबला करें।" 18 इस्राएल के राजा योआश
ने कहा," लबानोन की झड़बेरी ने देवदार
तक समाचार पहुँचाया कि उसकी बेटी से
मेरे बेटे की शादी करवा दे। तभी लबानोन
का एक जंगली जानवर वहाँ से गुज़रा और
झड़बेरी को कुचल दिया। 19 तुम कहते हो,
"कि मैंने एदोमियों पर जीत हासिल कर ली
है।" इसलिए तुम्हारे मन में घमण्ड आ गया
है। अपने घर में रहो, तुम क्यों डालते हो
? ऐसा करने से तुम क्या, यहूदा को भी
अपमानित होना पड़ेगा। 20 लेकिन अमस्याह
ज़िद्दी बना रहा। यह प्रभु की इच्छा भी थी,
कि वह उन्हें, उनके दुश्मन के हाथ में कर
दे, क्योंकि वे एदोम में देवता को पूजने
लगे थे। 21 तब इस्राएल के राजा योआश
ने हमला बोला ओर उसने तथा यहूदा के
राजा अमस्याह ने यहूदा देश बेतशेमेश में
एक दूसरे का मुकाबला किया। 22 यहूदा
इस्राएल से जीत न सका। सभी लोग अपने
डेरों की ओर भाग खड़े हुए। 23 तब इस्राएल
के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह
को, जो यहोआहाज का पोता और योआश
का बेटा था, बेतशेमेश में पकड़ लिया और
यरूशलेम को ले गया। उसने उसे यरूशलेम
की शहरपनाह में से एप्रैमी फ़ाटक से कोने
वाले फ़ाटक तक चार सौ हाथी गिरा दिए।
24 जितना सोना-चान्दी और जितने बर्तन प्रभु
के भवन में ओबेदेदोम के पास मिले। राज
भवन में जितना खज़ाना था, वह सब और
लोगों को गुलाम बना कर वह शोमरोन ले
गया। 25 यहोआहाज के बेटे इस्राएल के राजा
योआश के देहान्त होने के बाद योआश का
बेटा यहूदा का राजा अमस्याह पन्द्रह साल
तक जीवित रहा। 26 शुरू से आखिर तक
अमस्याह राजा के दूसरे और काम राजाओं
की किताबों में लिखे हैं। 27 जब से अमस्याह
जीवित प्रभु से दूर चला गया था, उस समय
से यरूशलेम में उसके खिलाफ़ विद्रोह की
योजना बनने लगी थी और वह लाकीश भाग
गया था। दूतों ने लाकीश तक उस का पीछा
किया था और वहीं उसे मार भी डाला। 28 तब
वह घोड़ों पर रख कर पहुँचाया गया और
यहूदा के नगर में दफ़ना दिया गया।

26 उजिय्याह की उम्र सोलह साल थी।
उसके पिता अमस्याह के निधन
के बाद प्रजा ने उसे ही राजा बनाया।
2 उजिय्याह ने एलोत नगर को यहूदा में
फ़िर से मिला लिया। 3 उसने बावन साल
तक राज्य किया। उसकी माँ का नाम था
यकील्याह। 4 उजिय्याह अपने पिता की तरह
ही जी रहा था। 5 ज़कर्याह के दिनों में जो प्रभु
के दर्शन के बारे में ज्ञान रखता था। वह प्रभु
की मानता रहा, तब तक प्रभु ने उसे ऊँचाई
पर रखा। 6 तब वह गया और पलिश्तियों
से लड़ा। उसने गत, यब्ने और अश्दोद की
शहरपनाह को ढा दिया। उसने अश्दोद के
आस-पास और पलिश्तियों के बीच नगर
बसा दिए। 7 पलिश्तियों, गूर्बालवासियों,
अरबियों और मूनियों के खिलाफ़ प्रभु ने
उसकी मदद की । 8 अम्मोनी लोग उजिय्याह
को ईनाम देने लगे। उसकी शौहरत मिस्र की

सरहद तक पहुँच गयी। वह बहुत ताकतवर
हो गया था। 9 फिर उजिय्याह ने यरूशलेम
में कोने के फ़ाटक और तराई के फ़ाटक
और शहरपनाह के मोड़ पर गुम्मट से मज़बूत
किया। 10 जानवरों की वजह से उसने जंगल
में चौरस जगह और गुम्मट बनवाए हौज़
खुदवाए। पहाड़ों पर और कर्मेल में किसान
अंगूर के बगीचों की देख-भाल करते थे।
11 उजिय्याह के फ़ौजियों की एक सेना थी,
जिनकी गिनती यीएल मुंशी और मासेयाह
सरदार, हन्नयाह नामक राजा के एक हाकिम
के आदेश से डरते थे और उसके अनुसार
वह दल बानधकर लड़ने के लिए जाती थी।
12 पितरों के परिवार के मुख्य -मुख्य आदमी
जो बहादुर थे, गिनती में दो हज़ार छैः सौ थे।
13 उनके हाथ में तीन लाख साढ़े सात हज़ार
की एक फ़ौज थी, जो दुश्मनों के खिलाफ़
राजा की मदद करने बड़ी ताकत से युद्ध
करने वाले लोग थे। 14 पूरी फ़ौज के लिए
उजिय्याह ने ढालें, भाले, झिलम, टोप, धनुष
और गोफ़न के पत्थर तैयार किए। 15 फिर
उसने यरूशलेम में गुम्मटों और कंगूरों पर
रखने के लिए चालाक आदमियों के निकाले
हुए यंत्र भी बनवाए। इनके द्वारा तीर और
बड़े-बड़े पत्थर फेंके जाते थे। उस का नाम
दूर-दूर तक फैल गया क्योंकि वह बहुत
ताकतवर हो गया था। 16 घमण्ड से वह फूल
भी गया। उसने प्रभु से विश्वासघात किया।
वह प्रभु के भवन में गया और वहाँ धूप जलाने
लगा। 17 पुरोहित अजर्याह, अस्सी पुरोहित
जो बहादुर थे, सभी भीतर गए। 18 उजिय्याह
राजा से वे बोले, “यह तुम्हारा काम नहीं
है। ये काम हारून के वंश का ही है। तुम
बाहर चले आओ। 19 उजिय्याह पुरोहितों पर
गुस्सा हो गया और तभी उसके माथे पर
कोढ़ दिखने लगा। 20 सभी, जो वहाँ थे, उन
लोगों ने यह देखा और जल्दी से उसे बाहर
निकाला। वह खुद भी जल्दी से निकला जाना
चाहता था। 21 उसके देहान्त तक वह ऐसा
ही रहा। वह प्रभु के भवन में न जा सकता
था और अलग रहता था। उसके बेटे को
राजमहल के काम पर लगाया गया और
इन्साफ़ का काम भी दिया गया। 22 आमोस
के बेटे यशायाह की किताब में उसके बारे
में लिखा है। 23 उसके मरने के बाद खेत में
दफ़नाया गया, क्योंकि मरते समय तक वह
कोढ़ी थी।

27 पच्चीस साल की उम्र में योताम का
शासन शुरू हुआ। उसने सोलह
साल तक राज्य किया। उसकी माँ का नाम
यरूशा था, जो सादोक की बेटी थी। 2 जो
कुछ प्रभु चाहते थे, उसने वही किया। वह
प्रभु के मन्दिर में भीतर कभी नहीं गया। उस
समय प्रजा के लोगों का चालचलन ठीक
नहीं था। 3 उसने प्रभु के भवन के ऊपर वाले
फ़ाटक को बनाया। 4 उसने यहूदा के पहाड़ी
देश में तमाम नगरों को मज़बूत किया। उसने
जंगलों में किले और गुम्मट बनवाए। 5 वह
अम्मोनियों के राजा से युद्ध करके उन पर
हावी हो गया। उसी साल अम्मोनियों ने उस
को सौ किक्कार चाँदी और दस हज़ार कोर
गेहूँ और जौ दिया। दूसरे और तीसरे साल
में उन्होंने उसे उतना ही दिया। 6 इस तरह
योताम ताकतवर हो गया। वह सही जीवन
बिताता था। 7 योताम के बारे में सब कुछ
इस्राएल और यहूदा के राजाओं के इतिहास
में लिखा है। 8 जब वह राजा बना तब उसकी
आयु पच्चीस साल थी। उसने सोलह साल
तक राज्य किया। 9 योताम को मौत के बाद
दाऊदपुर ही में दफ़नाया गया। उस का बेटा
आहाज़ उसकी जगह पर राजा बना।

28 अहाज की उम्र जिस समय वह
शासन करने लगा, बीस साल की
थी। सोलह साल तक उसने राज्य किया
।उसके काम दाऊद की तरह नहीं थे। 2 वह
इस्राएल के राजाओं का सा जीवन जीता
रहा। उसने बाआल की मूर्तियाँ बनवायी।
3 हिन्नोम की घाटी में उसने धूप जलाया।
उसने वहाँ के लोगों के से घिनौने काम किए।
वे लोग अपने बाल-बच्चों तक की कुर्बानी
दिया करते थे। 4 ऊँची जगहों और पहाड़ियों
और सारे हरे पौधों के नीचे वह कुर्बानी
करता और धूप जलाता था। 5 इस कारणवश
प्रभु परमेश्वर ने उसे अरामियों के सुपुर्द कर
दिया। उसको जीतकर उसके बहुत से लोगों
को गुलाम बना कर दमिश्क ले गए। और
उसे इस्राएल के राजा के अधीन कर दिया
गया। उसने उसे बहुत मारा। 6 रमल्याह के
बेटे पेकह ने यहूदा में एक ही दिन में एक
लाख बीस हज़ार बहादुर लोगों को मौत
के घाट उतार दिया, क्योंकि उन्होंने अपने
पितरों के प्रभु परमेश्वर को छोड़ दिया था।
7 जिक्री नाम का एक बहादुर एप्रैमी था।
उसने मासेयाह नाम के राजपुत्र, राजमहल
के प्रधान अज्रीकाम और एल्काना को जो
राजा का मंत्री था, मार डाला। 8 अपने भाईयों
में से इस्राएली महिलाओं बेटों और बेटियों
को गुलाम बना कर और उन्हें लूट कर
शोमरोन चल दिए। 9 ओदेद नाम का एक
भविष्यद्वक्ता वहाँ रहता था। शोमरोन से आने
वाली फ़ौज से वह मिला और बोला,"तुम्हारे
बाप-दादों के प्रभु परमेश्वर ने गुस्से में उनको
तुम्हारे हाथ में कर दिया है। तुमने उनको
गुस्से में ऐसा मारा, कि उनकी दोहाई प्रभु
ने सुन ली है। 10 अब तुम्हारा इरादा है
कि यरूशलेमियों और यहूदियों को अपने
गुलाम बना कर रखो। क्या प्रभु के सामने
तुम भी आरोपी नहीं हो ? 11 इसलिए मेरी
सुनो और उन गुलामों को जो तुम्हारे ही
भाई-बहन हैं, जाने दो, क्योंकि प्रभु की सज़ा
तुम पर आ रही है। 12 तब योहानान का बेटा
ज़कर्याह मशिल्लेमोत का बेरेक्याह, शल्लूम का
यहिजकिय्याह और हल्दै का बेटा अमासा
लड़ाई से आने वालों से कहने लगे, 13 तुम
गुलाम बनाए गए लोगों को यहाँ मत लाओ,
क्योंकि हम अपराधी ठहरेंगे और पमरेश्वर
के दण्ड के योग्य भी। 14 तब उन लोगों ने
यह बात मान ली। 15 जिन लोगों केनाम ऊपर
लिखें है, उन्होंने उन्हें कपड़े पहनाए, खाना
खिलाया। जो कमज़ोर थे उन्हें गदहों पर
बैठाया और उनके भाईयों के पास यरीहो
पहुँचा दिया। वे खुद शोमरोन आ गए। 16 तभी
असीरिया के राजा के पास, आहाज़ ने दूत
भेज कर मदद मांगी। 17 क्योंकि एदोमियों ने
यहूदा में आकर लोगों को मारा और गुलाम
बना कर ले गए। 18 पलिश्तियों के नीचे
हिस्से और यहूदा के दक्षिण के नगरों पर
हमला करके, बेतलेमेश, अय्यालोन, गेदोरेत
को और अपने अपने गाँव सहित सोको,
मिम्ना और गिमज़ों को ले लिया और वहीं
रहने भी लगा। 19 इस तरह प्रभु ने इस्राएल के
राजा आहाज़ के कारण यहूदा को दबा दिया,
क्योंकि वह निराश होकर चला गया और
प्रभु से दगाबाज़ी की। 20 तब असीरिया का
बादशाह तिलगतपिलनेसेर उसके खिलाफ़
आया और उसे तकलीफ़ दी। 21 आहाज़ ने
प्रभु के भवन और राजमहल और गवर्नरों के
घर में से धन निकाल कर असीरिया के राजा
को दिया। लेकिन इस से उसे कुछ फ़ायदा
नहीं हुआ। 22 परेशानी के वक्त आहाज़ प्रभु
के प्रति और विश्वासघाती निकला। 23 उन
देवताओं के लिए उसने कुर्बानी चढ़ायी,
जिन्हों ने उसे मारा था। वह सोचता था

कि अरामी राजाओं के देवताओं ने उसकी
मदद की थी। तो उसकी भी वे मदद करेंगे।
लेकिन इस से केवल बर्बादी हुयी। 24 इसके
बाद आहाज़ ने प्रभु के भवन के बर्तनों
को तुड़वा डाला। उसने प्रभु के भवन के
दरवाजों को बन्द कर दिया। उसने यरूशलेम
के हर कोने में वेदियाँ बनवायी। 25 यहूदा
के हर एक नगर में उसने दूसरे देवताओं
की आराधना करने के लिए ऊँची जगहें
बनवायीं। इस तरह उसने प्रभु को गुस्सा
दिलाया। 26 राजाओं के इतिहास की पुस्तक
में उस का पूरा लेखा-जोखा है। 27 मरने के
बाद उसे यरूशलेम नगर में दफ़नाया गया।
उस का बेटा हिजकिय्याह उसके बाद राजा
बना।

29 पच्चीस साल की आयु में
हिजकिय्याह के हाथ में राज-काज
आ गया था। उसने उन्तीस साल तक राज्य
किया। ज़कर्याह की बेटी अबिय्याह स की
माँ थी। 2 उसने वैसा ही जीवन जिया, जैसा
प्रभु चाहते थे। 3 अपने शासन के पहले साल
के पहले महीने में ही उसने प्रभु के भवन के
दरवाज़े खुलवा दिए और मरम्मत भी कराई।
4 फिर पुरोहितों और लेवियों को पूरब के
चौक पर इकट्ठा किया। 5 वह बोला," हे
लेवियों, खुद को और प्रभु के भवन को शुद्ध
करो। पवित्रस्थान में से गंदगी निकालो।
6 हमारे पूर्वजों ने वह किया था जो प्रभु
को मंज़ूर नहीं था। उन्होंने प्रभु को अपनी
पीठ, दिखाई। 7 बरामदों के दरवाज़े उन्होंने
बन्द कर दिए और दीपकों को बुझा दिया।
उन्होंने पवित्रस्थान में न ही धूप जलाया
और न ही होमबलि चढ़ाई। 8 इसलिए प्रभु
का गुस्सा यहूदा ओर यरूशलेम पर भड़क
उठा। उस वजह से उन्हें मारे -मारे फिरना
था। वे हँसने का कारण भी बने, जो कि
सब देख सकते हैं। 9 देखो, इसी कारण से
हमारे पूर्वज तलवार स मारे गए थे। साथ
ही ये हमारे बेटे-बेटियाँ और पत्नियाँ गुलाम
बना कर ले जाई गईं। 10 अब मैंने इरादा
किया है कि इस्राएल के प्रभु परमेश्वर से
वाचा बान्धूँ, ताकि प्रभु का गुस्सा ठण्डा हो
जाए। 11 "हे मेरे बेटो आलसी मत बनो। प्रभु
परमेश्वर ने तुम्हें सेवा करने ओर धूप आदि
जलाने के लिए अलग किया था। 12 फिर
कहातियों में से अमासै का बेटा महत और
अजर्याह का बेटा योएल और मरारियों में से
अब्दी का पुत्र कीश और यहल्लेल का पुत्र
अजर्याह और गेर्शोनियों में से जिम्मा का
बेटा योआह और योआह का बेटा एदेन।
13 एलीसापान की औदाद में से शिम्री और
यूएल, आसाप की सन्तान में से ज़कर्याह
और मतन्याह। 14 हेमान की सन्तान में से
यहूएल और शिमी और यदूतून की सन्तान
में से शमायाह और उज़ीएल 15 ये लोग
अपने भाईयों को एक जगह लाए। खुद को
इन लोगों ने शुद्ध किया। राजा की आज्ञा
के मुताबिक प्रभु के भवन को साफ़ करने
अन्दर गए। 16 पुरोहित भवन के अन्दर के
हिस्से में सफ़ाई के लिए गया। जो गंदी चीजें
मिलीं थी, उन्हें वह बाहर ले आया, लेवियों
ने उन्हें उठा कर किद्रोन नाले में डाल दिया।
17 पहले महीने के पहले दिन को इन लोगों
ने सफ़ाई का काम शुरू किया था। उसी
महीने के आठवें दिन को ये लोग सफ़ाई
करते -करते बरामदे तक आ गए। इस तरह
भवन की शुद्धता का काम आठ दिन में हो
गया। पहले महीने के सोलहवें दिन को उन
लोगों ने काम खत्म किया। 18 तब वे राजा
हिजकिय्याह से बोले, "हम ने सब कुछ
शुद्ध कर दिया है।" 19 जितने बर्तनों को

आहाज़ राजा ने फेंक दिया था, उन्हें ठीक से फिर प्रभु की वेदी के सामने रखा गया है।
20 सुबह हिजकिय्याह उठा और गवर्नरों को लेकर प्रभु के भवन में गया। 21 तब राज्य, पवित्र -स्थान ओर यहूदा के लिए उन्होंने सात बछड़े, सात मेंढ़े, सात भेड़ के बच्चे और अपराधबलि के लिए सात बकरे ले कर आए। उसने लेवियों को यह आदेश दिया कि कुर्बानी की जाए। 22 तब उन लोगों ने बछड़े कुर्बान किए। पुरोहितों ने उनका खून वेदी पर छिड़का। फिर मेंढ़े कुर्बान किए गए और उनके खून के साथ भी वही किया गया। भेड़ के बच्चों का खून भी छिड़का गया। 23 इसके बाद अपराधबलि के बकरों को राजा और मण्डल के सामने लाया गया और उन पर हाथ रखे। 24 पुरोहितों ने उन्हें कुर्बान करके वेदी पर खून छिड़क कर अपराधबलि अर्पित की। इस तरह पूरे इस्राएल के लिए प्रायश्चित्त किया गया। यह राजा का आदेश था कि पूरे इस्राएल के लिए अपराध बलि चढ़ायी जाए। 25 फिर सारे बाजों के साथ लेवियों को प्रभु के भवन में खड़ा किया गया। 26 याजक[a] भी तुरहियाँ लेकर खड़े रहे। 27 तभी हिजकिय्याह की आज्ञा से होमबलि चढ़ाई जाने लगी और गाना बजाना भी शुरू हुआ। 28 इकट्ठे हुए लोग दण्डवत् करते रहे। होम बलि किए जाने तक यह सब होता रहा। 29 कुर्बानी चढ़ाए जाने के बाद राजा और प्रजा ने सिर झुका लिए। 30 राजा ने कहा कि दाऊद और आसाप द्वारा बनाए गए गीतों को गाया जाए। सभी ने खुशी के साथ स्तुति की और सिर झुकाया। 31 हिजकिय्याह बोला, “प्रभु के लिए कुर्बानी की गयी है, इसलिए पास आओ और मेलबलि तथा धन्यवाद बलि चढ़ाओ। ऐसा किया गया भी। लोगों ने अपनी इच्छा से भी ऐसा किया। 32 मण्डली के लोग जो होमबलि जानवर ले आए थे उनकी संख्या ऐसी थी : सत्तर बैल, एक सौ मेंढ़े, दो सौ भेड़ के बच्चे। 33 अलग किए हुए जानवरों में छैः सौ बैल और तीन हज़ार भेड़ बकरियाँ। 34 पुरोहितों की संख्या कम होने की वजह से वे खाल नहीं उतार पा रहे थे। इसलिए लेवियों ने मदद की। पुरोहितों ने अपने आप को शुद्ध नहीं किया, क्योंकि लेवीय अपने आपको पवित्र करने के लिए पवित्र पुरोहितों से ज़्यादा सीधे मन के थे। 35 होमबलि के लिए बहुत से जानवर थे। मेलबलि जानवरों की चर्बी बहुत थी। हर एक होमबलि के साथ अर्घ भी देना पड़ा। इस तरह से भवन की उपासना ठीक की गई। 36 तब हिजकिय्याह और सभी लोग बहुत खुश हुए।

30 हिजकिय्याह ने पूरे इस्राएल और यहूदा में खबर भिजवायी। साथ ही एप्रैम मनश्शे को चिट्ठी लिखी, ‘’ फ़सह मनाने तुम लोग यरूशलेम आओ।” 2 फ़सह दूसरे महिने में होने वाला था 3 इसलिए कि बहुत कम पुरोहितों ने अपने आप को पवित्र किया था, उसी समय मनाना मुश्किल था इसके अलावा ज़्यादा लोग यरूशलेम में इकट्ठा नहीं हुए थे। 4 इस बात से सभी राज़ी थे। 5 उन्होंने यह निश्चित किया कि बेर्शेबा से लेकर दान तक लोगों को बनाए जाए कि सभी को फ़सह मनाने यरूशलेम जाना है। 6 इतने बड़े पैमाने पर फ़सह पहले नहीं मनाया गया था। इसलिए हरकारे राजा और उसके गवर्नरों से चिट्ठियाँ लेकर राजा के आदेश के मुताबिक सब जगह घूमें। वे कहते गए कि मन बदलो

[a] **29.26** पुरोहित

तब तह तुम्हारे तरफ़ अपना रूख करेंगे।
7 तुम लोग अपने पूर्वजों की तरह प्रभु के साथ
दगाबाज़ी मत करो। 8 तुम ज़िद्दी मत बनो
लेकिन नम्र बन कर पवित्र स्थान में आओ।
वहाँ प्रभु की वन्दना करो। प्रभु का गुस्सा
शान्त हो जाएगा। 9 यदि तुम ऐसा करोगे, तो
जो लोग तुम्हारे रिश्तेदारों को गुलाम बना
कर ले गए हैं, उन पर तरस खाएँगे ओर वे
वापस इस देश में लौट सकेंगे। तुम्हारे प्रभु
तरस रहने वाले है। जब तुम उनकी तरफ़
मुड़ोगे वह भी तुम्हारी तरफ़ निगाह करेंगे।
10 इस तरह हरकारे, एप्रैम, मनश्शे के देशों
में होते हुए जबूलून पहुँचे। लेकिन वहाँ के
लोगों ने हँसी उड़ायी 11 फिर भी कुछ लोग
यरूशलेम आए। 12 यहूदा के लोगों ने भी
आने की हिम्मत की। 13 इसलिए बहुत से
यरूशलेम आए, ताकि अखमीरी रोटी का
त्यौहार मनाएँ। 14 यरूशलेम की वेदियों और
धूप जलाने का सभी चीज़ों का उन्होंने किद्रोन
नाले में डाल दिया। 15 दूसरे महीने के चौदहवें
दिन का फ़सह के लिए चौदहवें दिन का
फ़सह के लिए कुर्बानी की। तब पुरोहित और
लेवियों को शर्म आई। वे अपने को पवित्र
करके होमबलियों को भवन में लाए। 16 खड़े
होकर पुरोहितों ने खून लेवियों के हाथ से
लेकर छिड़क दिया। 17 सभा में तमाम लोगों
ने अपने आप को शुद्ध नहीं किया था इसलिए
उनके फ़सह के पशुओं को कुर्बान करने
की ज़िम्मेदारी लेवियों को दी गयी। 18 एप्रैम,
मनश्शे, इस्साकार और जबूलून में से बहुत
से लोगों ने अपने को शुद्ध नहीं किया। 19 जो
लोग प्रभु की ओर मन लगाए हुए है, चाहे
वे पवित्र स्थान की विधि के अनुसार शुद्ध
भी न हो, हिजकिय्याह ने माफी के लिए
प्रार्थना की। 20 प्रभु ने यह प्रार्थना सुनी और
लोगों को अपनाया। 21 जो लोग यरूशलेम
में थे, सात दिन तक त्यौहार खुशी से मनाते
रहे। प्रतिदिन ऊँचे स्वर में स्तुति आराधना
होती रही। 22 जो लेवीय बुद्धिमानी से भजन
कीर्तन में हिस्सा लेते थे, हिजकिय्याह ने
उन्हें शाबाशी दी। इस तरह अपने गुनाहों
को मानते, मेलबलि चढ़ाते रहे और यह
सिलसिला सात दिन तक चला। 23 तब लोगों
ने कहा कि वे सात दिन और त्यौहार मनाना
चाहेंगे। 24 यहूदा के राजा ने सभा को एक
हज़ार बछड़े और सात हज़ार भेड़-बकरियाँ
दे दीं। गवर्नरों ने एक हज़ार बछड़े और दस
हज़ार भेड़ बकरियाँ दी। 25 फिर पुरोहितों
और लेवियों सहित यहूदा की सारी सभा
और इस्राएल से आए लोग यहूदा में रहने
वाले परदेशी, सभी ने खुशी मनायी। 26 दाऊद
के बेटे सुलैमान के समय से ऐसा नहीं हुआ
था, इसलिए वहाँ आनन्द हुआ। 27 अन्त में
लेवीय पुरोहितों ने प्रजा को आशीर्वाद दिया
और उनकी प्रार्थना प्रभु तक पहुँची।

31 इन सब बातों के बाद लोग
पूरे यहूदा, बिन्यामीन, एप्रैम और
मनश्शे गए और वहाँ लाटों को तोड़ डाला।
अशेरों को काट डाला, ऊँचे स्थानों और
वेदियों को गिरा दिया। 2 हिजकिय्याह ने
पुरोहितों के और लेवियों के दलों को
सेवकाई पर ठहरा दिया कि वे कुर्बानियाँ
चढ़ाएँ और स्तुति आराधना किया करें।
3 फिर उसने अपनी दौलत में से राज भाग
को होमबलियों के लिए ठहराया। सुबह और
शाम की बलि और विश्राम और नए चाँद
के दिनों और निश्चित समयों की होमबलि
के लिए जैसा कि प्रभु द्वारा दिए गए नियम
-आज्ञाओं में है। 4 और उसने यरूशलेम में
रहने वालों को पुरोहितों और लेवियों को
उनका हिस्सा देने का आदेश दिया, ताकि वे

प्रभु के आदेश को तन मन से मानें। 5 यह सब
सुनते ही इस्राएली अनाज, नया दाखमधु,
टटका तेल, शहद आदि खेती की पहली
उपज भरपूरी से देने और सभी चीज़ों का
दसवाँ हिस्सा अधिक मात्रा में लाने लगे।
6 जो इस्राएली और यहूदी यहूदा के नगरों में
रहा करते थे, वे भी बैलों और भेड़-बकरियों
का दसवाँ हिस्सा और उन पवित्र चीज़ों
का दसवाँ हिस्सा, जो प्रभु के लिए अलग
किया गया था, लाने लगे। 7 इस तरह तीसरे
महीने में ढेर के लगाने की शुरूआत हुई
थी और यह सातवें महीने में पूरी हो गई।
8 जब हिजकिय्याह और गवर्नरों ने आकर
उसे देखा, तब प्रभु और उसकी प्रजा की
बड़ाई की। 9 तब हिजकिय्याह ने पुरोहितों
और लेवियों से उसके बारे में पूछ-ताछ
की। 10 अजर्याह महापुरोहित ने जो सादोक
के कुटुम्ब का था, उस से कहा, “जब से
लोग प्रभु के भवन में उठायी हुयी भेंटें लाने
लगे हैं, तब से हमें पेट भर खाना मिल
रहा है। यहाँ तक कि बच भी जाता है।
प्रभु ने अपने लोगों को अपनी भलाई चखा
दी है। जो बच गया है वह यहाँ इकट्ठा
है। 11 तब हिजकिय्याह ने प्रभु के भवन में
कोठरियाँ बनाने का आदेश दिया और वे
बन कर तैयार भी हो गयीं। 12 तब लोगों ने
दिए गए-पैसे, दसवाँ भाग और अलग की
हुई वस्तुएँ ईमानदारी से पहुँचाई । उनके
खास अधिकारी तोको कोनन्याह नाम एक
लेवीय और दूसरा उनका भाई शिमी नायब
था। 13 कोनन्याह और उसके भाई शिमी
के नीचे, हिजकिय्याह राजा और प्रभु के
भवन के मुखिया अजर्याह दोनों के आदेश
से अहीएल, अजज्याह, तहत, असाहेल,
यरीमोत, योजाबाद, एलीएल, यिस्मक्याह
महत और बनायाह अधिकारी थे। 14 प्रभु
के लिए अपनी इच्छा से देने वालों का
अधिकारी यिम्ना लेवीय का बेटाकोरे था।
वह पूरब के फ़ाटक का पहरेदार था। उस
का काम था कि परमपवित्र वस्तुओं और
आयी हुयी भेंटों को बाँटे। 15 उसके अधिकार
में एदेन, बिन्यामीन, येशू, शमायाह, अमर्याह
और शकन्याह पुरोहितों के नगरों में रहते थे।
वे सभी लोगों को बिना किसी पक्षपात दिया
करें। 16 साथ ही वे उनको भी दें जो आदमियों
की वंशावली के अनुसार गिने जाकर तीन
साल की उम्र के या उस से ज़्यादा के थे। ये
लोग अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने के लिए प्रभु
के भवन में जाते रहे। 17 और उन पुरोहितों
को भी दें जिन की वंशावली उनके पितरों के
घरानों के मुताबिक की गई और उन लेवियों
को भी जो बीस वर्ष की आयु से लेकर आगे
को अपने-अपने झुण्ड के अनुसार अपने
काम कर लेते थे। 18 सारी सभा में उनके
बाल-बच्चों, पत्नियों, बेटों और बेटियों को
भी दें, जिन की वंशावली थी, क्योंकि वे
ईमानदारी से अपने आप को अलग रखते
थे। 19 हारून की औलाद के पुरोहितों को
भी जो अपने अपने नगरों की चरागाह वाले
मैदान में रहते थे, देने के लिए वे आदमी
ठहराए गए थे। इनके नाम ऊपर लिखे हुए
थे, कि वे पुरोहितों के सभी आदमियों और
न सभी लेवियों को भी उनका हिस्सा दिया
करें, जिन की वंशावली थी। 20 पूरे यहूदा में
हिजकिय्याह ने ऐसा ही इन्तजाम किया। प्रभु
की निगाह में जो ठीक था, वह करता रहा।
21 जो जो काम उसने आराधना और नियम
-आज्ञाओं के बारे में किए, वह दिल लगा
कर किए।

32 इन बातों के बाद असीरिया का
राजा सन्हेरीब यहूदा में दाखिल

हुआ। मज़बूत नगरों के विरुद्ध डेरे डाल
कर उनको अपने फ़ायदे के लिए वे लेना
चाहता था। 2 सन्हेरीब लड़ाई चाहता था
3 हिजकिय्याह ने सलाह मशविरा के बाद
सोतों को पटवा दिया। 4 असीरिया के राजा
सन्हेरीब को और उसकी सेना को पानी न
मिल सके, इसलिए लोगों ने नदी को पाट
दिया। 5 हिम्मत करके टूटी शहरपनाह राजा
ने बनवानी आरम्भ की। बाहर की ओर एक
और शहरपनाह बनवायी। उसने दाऊदपुर
में मिल्लो को मज़बूत बनाया और तीर तथा
ढालें बनवायीं। 6 प्रजा पर सेनापति ठहराए
गए। उन्हें नगर के फ़ाटक के चौक पर
बुलाया और उनकी हिम्मत बढ़ायी। 7 उसने
कहा,"हिम्मत रखो असीरिया के राजा और
उसकी फ़ौज से न डरना। हमारे साथ जो हैं,
वह बहुत बड़े है। 8,9 उनका सहारा इन्सान
है, हमारे साथ प्रभु हैं।"लोगों ने इस बात
पर भरोसा किया भी। 10 असीरिया के राजा
ने यह समाचार भेजा, '' तुम लोग घिर चुके
हो। 11 तुम्हारा राजा तुम्हें बहका रहा है और
तुम्हें भूखा - प्यासा मरवा देगा। 12 क्या इसी
हिजकिय्याह ने ऊँची जगहों और वेदियों को
खत्म करके यहूदा और यरूशलेम को आदेश
नहीं दिया था, कि तुम एक ही वेदी पर
धूप जलाना और दण्डवत् करना। 13 क्या
तुम्हें यह मालूम नहीं कि मैंने और हमारे
पुरखाओं ने देश के लोगों के साथ क्या किया
? क्या उन देशों के प्रभु मेरे हाथ से बचा
सके ? 14 जितने राष्ट्रों को मेरे पुरखाओं
ने बर्बाद किया, उनके सभी देवी-देवता में
से कौन था, जिस ने मेरे हाथ से बचाया?
फिर तुम्हारा देवता तुम्हें कैसे बचा सकेगा
? 15 इसलिए हिजकिय्याह तुम्हें धोखा न
दे। तुम उस पर भरोसा न करना। आज
तक हमारे पुरखाओं और मेरे हाथ से कोई
भी न बच सका है। तुम्हारा भी यही हाल
होगा। 16 राजा के कर्मचारियों ने यह संदेश
तो दिया ही, साथ में प्रभु और हिजकिय्याह
की बेइज्ज़ती भी की। 17 फिर उसने एक
ऐसी चिट्ठी भेजी, जिस में प्रभु परमेश्वर की
बेइज़्ज़ती की गई थी। इस चिट्ठी में भी वही
बात दोहरायी गयी थी। जो लोगों से कही
गयी। 18 ऊँची आवाज़ से इन कर्मचारियों ने
वहाँ के लोगों को डराना चाहा। 19 उन्होंने
देवताओं के बराबर ही प्रभु को दर्शाया।
20 इन सभी बातों के बाद हिजकिय्याह ओर
आमोस के बेटे यशायाह ने प्रभु के सामने
गिड़गिड़ाना प्रारम्भ किया। 21 तभी प्रभु ने
एक दूत भेजा, जिस ने असीरिया के राजा
की छावनी में सभी बहादुरों, प्रधानों और
सेनापतियों को मार डाला। इसलिए राजा
शर्मिन्दा होकर वापस चला गया। वह जब
अपने देवता के घर में था, उसके बेटों ने
उसकी हत्या कर डाली। 22 इस तरह प्रभु
ने अपने लोगों को दुश्मन से बचा लिया।
23 प्रभु के लिए भेंट और हिजकिय्याह के
लिए ईनाम लेकर बहुत से लोग यरूशलेम
आए। तभी से देश-देश के लोग उसे ज़्यादा
सम्मान देने लगे। 24 हिजकिय्याह बीमार पड़ा
और मरने पर था। उसने प्रभु को पुकारा और
एक अजीब काम प्रभु ने किया। 25 घमण्ड
की वजह से प्रभु का गुस्सा उस पर और
यरूशलेम पर भड़का। उसने प्रभु की महिमा
नहीं की थी। 26 लेकिन बाद में वह दीन हो
गया। इसलिए प्रभु का गुस्सा शान्त हो गया।
27 हिजकिय्याह को बहुत सा धन-दौलत
मिला। उसने चान्दी, सोने, मणि, खुशबूदार
इत्र, ढालों, और हर तरह के खूबसूरत
बर्तनों के लिए भण्डार बनवाए। 28 फिर उसने
अनाज, नया दाखमधु और टटके तेल आदि
के लिए भण्डार बनवाए। जानवरों के लिए

थान और भेड़ -बकरियों के लिए भेड़शालाएँ
बनवायी। 29 उसने नगर बसाए। पशु और
दौलत इकट्ठी कर ली। 30 उसने गीहोन नामक
नदी के नीचे दाऊदपुर की पश्चिम अलंग को
सीधा पहुँचाया। उसके सभी काम सफल हो
रहे थे। 31 जब बाबेल के गवर्नरों ने उसके
पास उसके देश में किए हुए बड़े काम के बारे
में पूछने के लिए भेजा। तब प्रभु ने उस को
इसलिए छोड़ दिया कि उसे परखे और उसके
मन का सारा भेद जान ले। 32 आमोस के बेटे
यशायाह नबी की किताब में और इस्राएल
के राजाओं की किताब में हिजकिय्याह के
बारे में सभी कुछ लिखा है। 33 उसके मरने
पर दाऊद की सन्तान के कब्रिस्तान में उसे
दफ़ना दिया गया। सभी ने उसे इज्ज़त दी।
उस का बेटा मनश्शे राजा बन गया।

33 मनश्शे जब राज्य करने लगा,
उसकी उम्र बारह साल थी। उसने
पचपन साल तक यरूशलेम में राज्य किया।
2 वह हर बात में प्रभु के विरोध ही में काम
करता रहा। दूसरे देशों के घिनौने काम वह
करता था। 3 उन ऊँची जगहों को उसने फिर
से बनाया, जिन्हें उसके पिता ने तोड़ दिया
था। उसने बाल के लिए वेदियाँ बनायीं और
अशेरा की मूरतें भी। वह नक्षत्रों की पूजा
किया करता था। 4 प्रभु ने कहा था कि
मेरा नाम यरूशलेम में हमेशा बना रहेगा,
लेकिन उसने प्रभु के भवन में वेदियाँ बनवाई।
5 उसने दोनों आंगनों में भी नक्षत्रों के लिए
वेदियाँ बनवाई। 6 उसने हिन्नोम के बेटे की
तराई में अपने बाल-बच्चों को होम करके
चढ़ाया। उसने शुभ-अशुभ मुहूर्तों को माना।
टोना-टुटका पर उस का भरोसा था। ओझा
और भूतसिध्दि वालों से उस का सम्बन्ध
था। उसके और बहुत से ऐसे काम थे, जो
सही नहीं थे और जिन से प्रभु नाराज़ होते हैं।
7 प्रभु के भवन में उसने खुदी हुयी मूर्ति रखी।
8 प्रभु का कहना था कि इस्राएलियों को मारा
-मारा फिरना न पड़े इसलिये उन्हें दी गयी
आज्ञाओं- नियमों का पालन करना चाहिए।
9 लेकिन मनश्शे ने अपने लोगों से इतने गलत
काम करवाए जितने दूसरे, राष्ट्रों के लोग
भी नहीं करते थे। 10 प्रभु की वाणी की उसने
और उसके लोगों ने परवाह न की। 11 तब
प्रभु ने उन पर असीरियायों का हमला करवा
दिया। वे मनश्शे को और वहाँ के लोगों को
बन्दी बना कर ले गए। 12 परेशानी में उसने
अपने आप को दीन किया और गिड़गिड़ाया
। 13 उसकी सुनी गई और वह वापस पहुँचा
दिया गया। तब उसने मान लिया कि प्रभु
ही प्रभु हैं। 14 दाऊदपुर के बाहर गीहोन के
पश्चिम में नाले में मछली फ़ाटक तक उसने
शहरपनाह बनवायी। ओपेल को ऊँचा कर
दिया। यहूदा के मज़बूत नगरों में सेनापति
ठहराए। 15 फिर उसने दूसरे देवी-देवताओं
की जो मूर्तियाँ या वेदियाँ बनवायी थीं, उन्हें
दूर किया। 16 वेदियों को ठीक-ठाक करके
बलिदान चढ़ाना आरम्भ हुआ। उसने आदेश
दिया कि प्रभु परमेश्वर ही की उपासना की
जाए। 17 ऊँचे स्थानों में इसके बावजूद लोग
बलिदान करते रहे, लेकिन प्रभु परमेश्वर के
लिए 18 इस्राएल के राजाओं की पुस्तक में
उसके बारे में सब-कुछ लिखा है। 19 उस
का गिरना, दीन होना, बिनती सुना जाना
और दूसरे देवताओं की उपासना यह सब
कलमबन्द है। 20 उसके मरने के बाद उस
का बेटा अम्मोन गद्दी पर बैठा। 21 उसकी उम्र
केवल बाईस साल थी, जब उसने राज-काज
सम्भाला। उसने दो साल तक राज्य किया।
22 प्रभु की मर्जी के खिलाफ़ उसने ज़िन्दगी
बितायी, जैसी मनश्शे किया करता था। वह

मूर्तिपूजा में लगा रहा। 23 लेकिन जिस तरह
मनश्शे दीन हो गया था, वह न हुआ लेकिन
वह बद से बदतर होता गया। 24 उसके कार्य
कर्ताओं ने राजद्रोह किया और उसे मौत के
घाट उतार दिया। 25 दूसरे लोगों ने उनकी
हत्या की, जो अम्मोन के विरोध में थे।
उसकी जगह उसके बेटे योशिय्याह को गद्दी
पर बैठाया गया।

34 आठ साल की आयु में योशिय्याह
शासन करने लगा। उसने यरूशलेम
में इकतीस साल तक शासन किया। 2 जो
कुछ प्रभु को अच्छा लगता है, वही उसने
किया। जिस रास्ते पर दाऊद राजा चलता
रहा उसी को इस ने भी अपनाया। वह न
दायीं ओर मुड़ा न बायीं ओर। 3 राजासन पर
बैठे, उसे आठ वर्ष भी पूरे नहीं हुए थे कि
वह प्रभु को गहराई से जानने के लिए मन
रखता था। बारहवें साल में उसने मूरतों को
हटाने का काम शुरू किया। और यरूशलेम
को मज़बूत किया। 4 उसके देखते, बाआल
सूरज और अशेरा की मूरतों को उसने ढा
दिया। 5 उनके पुजारियों की हड्डियाँ उसने
वेदियाँ पर जलायी। इस तरह से उसने देश
को शुद्ध किया। 6 फिर मनश्शे, एप्रैम और
शिमोन के यहाँ तक कि नप्ताली तक के
इलाकों के खण्डहरों में बनी वेदियों को
उसने तहस नहस कर डाला। 7 अशेरा की
खुदी हुयी मूरतों को पीस डाला। सूरज की
प्रतिमाएँ समाप्त कर डालीं। 8 अपने राज्य
के अठारहवें साल में जब वह देश और
भवन दोनों की सफ़ाई कर सका, तब उसने
अराल्याह के बेटे शापान और नगर के गवर्नर
मामेयाह और योआहाज़ के बेटे इतिहास के
लेखक योआह की अपने प्रभु परमेश्वर के
भवन की मरम्मत करने भेजा गया। 9 उन्होंने
हिजकिय्याह महापुरोहित के पास जाकर
जो रकम प्रभु के भवन में लायी गयी थी,
अर्थात जो लेवीय दरबानों ने मनश्शियों,
एप्रैमियों और शेष रह गए इस्राएलियों से
और सब यहूदियों और बिन्यामीनियों से
और यरूशलेम के नागरिकों से इकट्ठा किया
था, उसके हवाले कर दिया। 10 अर्थात
उन्होंने उसे उन काम करने वालों के सुपुर्द
कर दिया जो प्रभु के भवन के काम पर
ज़िम्मेदार थे। प्रभु के भवन के उन काम
करने वालों ने उसे भवन की टूट-फूट की
मरम्मत करने में लगाया। 11 अर्थात उन्होंने
उसे बढ़ईयों और कारीगरों को दिया कि वे
गढ़े हुए पत्थर और जोड़ों के लिए लकड़ी
खरीदें। और उन घरों को भर दें जिन्हें
यहूदा के राजाओं ने बर्बाद कर दिया था।
12 ये लोग ईमानदारी से ईमानदारी से काम
किया करते थे। उनके अधिकारी मरारी,
यहत, ओबद्याह, लेवीय, कहाती, ज़कर्याह,
मशुल्लाम काम चलाने वाले और गाने-बजाने
का मतलब जानने वाले लेवीय भी थे। 13 फिर
वे बोझियों के अधिकारी थे जो तरह-तरह की
सेवा और काम चलाने वाले थे। कुछ लेवीय
मुंशी सरदार और दरबान थे। 14 जब वे प्रभु
के भवन के पैसे को निकाल रहे थे, तभी
हिलकिय्याह पुरोहित को मूसा के द्वारा दी
गयी आज्ञा -नियम की पुस्तक मिली 15 तब
हिलकिय्याह ने शापान मंत्री से कहा," मुझ
भवन में पुस्तक मिली है, फिर हिलकिय्याह
ने उसे शापान को दिया। 16 शापान उसे राजा
के पास ले गया। और यह समाचार दिया, कि
जो काम तुम्हारे कार्यकर्ताओं के सुपुर्द किया
गया था, उसे वे कर रहे हैं। 17 जो धन प्रभु
के भवन में मिला उसको उन्होंने मुखियों और
कारीगरों को दे दिया। 18 फिर शापान मंत्री ने
राजा को यह की बताया कि हिलकिय्याह

पुरोहित ने उसे एक किताब दी है, उसने उस
में से पढ़ कर सुनाया भी। 19 किताब की वे
बातें सुन कर राजा अपने कपड़े फाड़ने लगा।
20 फिर राजा ने हिलकिय्याह शापान के बेटे
अहीकाम, मीका के बेटे अब्दोन, शापान
मन्त्री और असायाह नाम अपने कर्मचारी
को आदेश दिया। 21 कि मेरी ओर से और
इस्राएल और यहूदा में रहने वाली की ओर
से इस किताब की बातों के बारे में प्रभु से
पूछो। इसलिए कि प्रभु का गुस्सा हम पर
इसलिए भड़का है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने
इस में लिखी बातों को नहीं माना। 22 तब
हिलकिय्याह राजा दूतों सहित हुल्दा नबिया
के पास गया। यह महिला शल्लूम की पत्नी
थी। शल्लूम तोखत का बेटा और हस्त्रा का
पोता था। 23 वह उन से बोला, इस्राएल के
प्रभु का कहना यह है, कि जिस आदमी ने
तुम को मेरे पास भेजा है, उस से यह कहो
24 कि प्रभु ऐसा कहते हैं, "मैं इस जगह और
यहाँ के रहने वालों पर मुसीबतें डाल कर
यहूदा के राजा के सामने जो किताब पढ़ी गई,
उस में लिखी सज़ाओं को दूँगा। 25 उन्होंने
मुझे छोड़ दिया है। अपने लिए ऐसी चीजें
बना ली है कि मुझे जलन के कारण गुस्सा
आ रहा है। 26 लेकिन यहूदा का राजा जिस
ने तुम्हें प्रभु के पूछने को भेजा है, उस से
तुम कहा, इस्राएल के प्रभु परमेश्वर का
कहना यह है, 27 इसलिए कि तुमने अपने
आप को नम्र किया है इसलिए मैंने तुम्हारी
फ़रियाद सुन ली है। 28 मैं, तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों
के साथ ऐसा मिलाऊँगा, कि तुम शान्ति के
साथ अपनी कब्र तक पहुँचाए जाओगे। जो
मुसीबत मैं यहाँ के लोगों पर लाना चाहता
था, तुम उसे न देखोगे। इन लोगों ने लौटकर
राजा को यह खबर दे दी। 29 तब राजा ने
यहूदा और यरूशलेम के सभी बुज़ुर्ग लोगों
का बुलाया। 30 उनके साथ वह प्रभु के भवन
में गया। साथ में पुरोहित लेवीय, प्रजा के
लोग भी थे वहाँ उसने किताब में से पढ़ कर
सुनाया। 31 फिर उसने प्रभु को शब्द दिए,"मैं
प्रभु की कही बातों के अनुसार करूँगा। पूरे
मन से मैं आज्ञा पालन करूँगा। इस किताब
में लिखी बातों का ध्यान रखूँगा। 32 जो लोग
यरूशलेम और बिन्यामीन से आए थे, उन से
भी उसने यह वाचा बन्धाई । यरूशलेम के
रहने वाले वैसा ही उस दिन से करने लगे।
33 योशिय्याह ने इस्राएलियों में से घिनौनी
वस्तुओं को दूर करवाया उसने प्रभु की
उपासना भी करवायी। उसके जीवन काल
तक लोग प्रभु परमेश्वर के आज्ञाकारी बने
रहे।

35 योशिय्याह ने यरूशलेम में प्रभु के
लिए फ़सह का त्यौहार मनाया।
पहले महीने के चौदहवें दिन को पशु को
कुर्बान किया गया। 2 उसने पुरोहितों को
उनका काम दिया और हिम्मत भी बढ़ायी।
3 फिर लेवीय जो लोगों को सिखाया करते
थे और अलग किए गए थे, उन से कहा,
"पवित्र बक्से को उस ईमारत में रखो, जो
दाऊद के बेटे सुलैमान ने बनवाया था। अब
तुम्हें कन्धों पर भार न उठाना पड़ेगा। अब
अपने प्रभु परमेश्वर की और उनके लोगों
की सेवा करो। 4 इस्राएल के राजा दाऊद
और उसके बेटे सुलैमान, दोनों ही की लिखी
विधियों के मुताबिक अपने- अपने पितरों
के अनुसार अपने-अपने दल में तैयार रहो।
5 तुम्हारे भाई लोगों के पितरों के घरानों के
हिस्सों के अनुसार पवित्र स्थान में खड़े रहो।
6 फ़सह के जानवरों की बलि करो। अपने को
पवित्र करके अपने भाईयों के लिए तैयारी
करो, कि वे प्रभु की आज्ञा के अनुसार जो

मूसा के द्वारा उन्हें बताया गया था, करे।
7 तब योशिय्याह ने वहाँ हाज़िर सभी लोगों
को तीस हज़ार भेड़ों-बकरियों के बच्चों और
तीन हज़ार बैल दिए। ये सभी फ़सह के
बलिदानों के लिए राजा की दौलत में से
दिए गए। 8 उसके गवर्नरों ने प्रजा के लोगों,
पुरोहितों, और लेवियों को अपने मन से दी
गयी भेंटों के लिए पशु दिए। हिलकिय्याह,
जकर्याह और यहीएल नाम प्रभु के भवन
के प्रधानों ने पुरोहितों को दो हज़ार छैः सौ
भेड़-बकरियाँ और तीन सौ बैल फ़सह के
बलिदानों के लिए दिए। 9 और कोनन्याह ने
और शमायाह और नतनेल जो उसके भाई
और हसब्याह यीएल और योजाबाद नामक
लेवियों के प्रधानों ने लेवियों को पाँच हज़ार
भेड़ बकरियाँ और बैल दिए। 10 इस तरह
आराधना की तैयारी हो गई। राजा के कहने
के हिसाब से पुरोहित और लेवीय अपनी
अपनी जगह दलों में खड़े हुए 11 तब फ़सह के
पशु कुर्बान किए गए। पुरोहित कुर्बानी करने
वालों के हाथों से खून छिड़कते गए और
लेवीय उनकी खाल निकालते गए। 12 तब
होम बलि के जानवर इसलिए अलग किए
कि उन्हें लोगों के पितरों के कुटुम्ब के हिस्सों
के अनुसार दें, कि वे प्रभु के लिए चढ़ाएँ,
जैसा मूसा की किताब में लिखा है, वैसा ही
उन लोगों ने बैलों के साथ किया। 13 तब
उन्होंने फ़सह के पशुओं का मांस आग में
भूंजा और पवित्र चीजें हंडियां और हंडों और
थालियों में रख कर एक दम लोगों को भेज
दिया। 14 तब अपने लिए और पुरोहितों के
लिए उन्होंने तैयारी की, क्योंकि हारून की
सन्तान के पुरोहित होमबलि के जानवर और
चर्बी रात तक चढ़ाते रहे। इसलिए लेवियों
ने अपने लिए और हारून की सन्तान के
पुरोहितों के लिए तैयारी की । 15 आसाप के
वंश के गाने वाले दाऊद, आसाप, हेमान और
राजा के दर्शी यदूतून के आदेश पर अपनी
अपनी जगह पर रहे। फ़ाटकों पर पहरेदार
थे। उन लोगों ने अपना का छोड़ा नहीं था
क्योंकि उनके भाई लेवियों ने उनके लिए
तैयार की थी। 16 उसी दिन फ़सह मनाने और
मेलबलि चढ़ाने के लिए ज़रूरी उपासना की
तैयारी की गई। 17 वहाँ उपस्थित इस्राएलियों
ने फ़सह को तभी मनाया और सात दिन
तक, अखमीरी रोटी के त्यौहार को मनाते
रहे। 18 शमूएल नबी के दिनों से इस्राएल में
कोई फ़सह मनाया नहीं गया था और न
ही इस्राएल के किसी राजा ने ऐसा मनाया
था। 19 यह फ़सह योशिय्याह के राज्य के
अठारहवें साल में मनाया गया। 20 तभी मिस्र
का राजा योशिय्याह से लड़ने आया। 21 उसने
दूतों के द्वारा यह कहला भेजा, “यहूदा के
राजा मुझे तुम से कुछ लेना नहीं। आज में तुम
पर नहीं लेकिन में एक कुल पर हमला कर
रहा हूँ, इसे प्रभु ने मुझे करने के लिए कहा
है। इसलिए सम्भल कर रहना, कहीं प्रभु तुम्हें
बर्बाद न कर डाले।” 22 लेकिन नको के इन
शब्दों की परवाह न करते हुए वह मगिद्दो की
तराई में उतर ही गया। 23,24 तब धनुष धारण
करने वाले लोगों ने राजा योशिय्याह की ओर
तीर छोड़े और राजा ने अपने सेवकों से कहा
,कि वह बहुत ज़ख्मी हो चुका है इसलिए
उसने सेवकों से बिनती की, कि वे उसे युद्ध
स्थल से बाहर ले जाएँ। उन्होंने ऐसा किया
भी, लेकिन वह ले जाते-जाते मर गया। उसे
पूर्वजों के कब्रिस्तान में उसे गाड़ दिया गया।
25 यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिए विलापगीत
रचा। इन गीतों को गाया भी जाने लगा।
26 योशिय्याह के काम कलमबन्द किए गए।

27 शुरू से आखिर तक के उसके कामों का
बखान इस इस्राएल के राजाओं की किताब
में हैं।

36 यरूशलेम में योशिय्याह के बाद
यहोआहाज को राजा बनाया गया।
2 उस समय उसकी आयु तेईस साल थी।
तीन महीने तक उसने राज्य किया। 3 मिस्र
के राजा ने उसे राजासन से उतार दिया।
उसने देश पर सौ किक्कार चान्दी और एक
किक्कार सोना जुर्माना लगाया। 4 तब मिस्र
के राजा ने उसके भाई एल्याकीम को यहूदा
और यरूशलेम का राजा बना डाला। उस का
नाम बदलकर यहोयाकीम कर दिया। मिस्र
का राजा उसके भाई यहोआहाज को मिस्र
ले गया। 5 जब यहोयाकीम का शासन शुरू
हुआ, तब उसकी उम्र पच्चीस साल थी। उसने
ग्यारह साल तक यरूशलेम पर राज्य किया।
उसके काम प्रभु को खुश करने वाले नहीं
थे। 6 बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने उस
पर हमला कर दिया और जंजीरों से बाँध
दिया। 7 नबूकदनेस्सर प्रभु के भवन के कुछ
बर्तन बाबेल ले गया और अपने मन्दिर में रख
दिए। 8 यहोयाकीम के दूसरे घिनौने कामों का
लेखा-जोखा इस्राएल और यहूदा के राजाओं
की किताब में है। उसकी जगह पर अगला
राजा उस का बेटा यहोयाकीम था। 9 आठ
साल की उम्र में वह राज्य करने लगा था।
उसने तीन महीने दस दिन शासन किया। जो
कुछ प्रभु नहीं चाहते थे, उसने वही किया।
10 नए साल के आरम्भ ही में नबूकदनेस्सर
ने उसे और खूबसूरत बर्तनों का बाबेल में
मँगवा लिया। उसके भाई सिदकिय्याह को
यहूदा और यरूशलेम पर राजा बना दिया।
11 इक्कीस वर्ष की उम्र में सिदकिय्याह राज्य
करने लगा था। यरूशलेम पर उसने ग्यारह
साल तक राज्य किया। 12 जो कुछ प्रभु को
पसन्द नहीं था, उसने किया। यिर्मयाह जो प्रभु
की ओर से कहा करता था, उसकी उसे कोई
चिन्ता नहीं थी, 13 नबूकदनेस्सर ने हालांकि
उस से वायदा करवाया था, इसके बावजूद
उसने अपनी बात को पूरा नहीं किया और
बलवा कर बैठा । उसने प्रभु की ओर अपना
मन नहीं किया। 14 सभी प्रधान पुरोहितों ने
और दूसरे लोगों ने दूसरे देशों के से गंदे
काम किए। उन्होंने प्रभु के भवन को अशुद्ध
कर डाला। 15 उनके पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर
ने बड़ी कोशिश करके अपने दूतों से उनके
पास संदेश भेज, क्योंकि वह अपनी प्रजा पर
तरस खाते थे। 16 लेकिन वे प्रभु के दूतों का
ठट्ठा करते, प्रभु की बातों को हल्का -फुलका
जानते और नबियों की बातों को हँसी में टाल
देते थे। इसलिए प्रभु बहुत गुस्सा हो गए।
17 तब कसदियों को उभारा कि वे उन पर
हमला करके। इनके जवानों को उनके पवित्र
भवन ही में मार डाला। छोटे-बड़ी स्त्री-पुरुष
और बूढ़ों पर किसी तरह की दया नहीं
दिखाई । 18 प्रभु के भवन के बर्तन, गवर्नरों
के खज़ाने और लोगों को वह अपने साथ
बाबेल ले गया। 19 कसदियों ने प्रभु के भवन
को जला डाला। यरूशलेम की शहरपनाह
को तोड़ डाला। सभी ईमारतों में आग लगा
दी। सारी कीमती चीजों को नष्ट कर दिया।
20 जो बच गए उन्हें वह उठा ले गया। फ़ारस
के राजा के ताकतवर बनने तक वे उसके
और उसके बेटों पोतों के अधीन रहे। 21 इन
सब से यिर्मयाह की नबूवत पूरी हुयी कि
देश अपने विश्राम कालों में सुख भोगता रहे।
इसलिए जब तक वह वीरान पड़ा रहा, तब
तक यानि कि सत्तर साल के पूरे होने तक
उसे राहत मिली 22 फ़ारस के राजा कुस्त्रू के
पहले साल में प्रभु ने उसके मन में डाला

कि यिर्मयाह के मुख से निकली बात पूरी
हो। इसलिए उसने अपने पूरे देश में संदेश
पहुँचवाया और चिट्ठियाँ लिखी। 23 कि फ़ारस
के राजा कुस्त्रू का कहना है, “स्वर्ग के प्रभु
परमेश्वर ने सारी दुनिया का अधिकार मुझे
दिया है। उन्हीं ने मुझे आजादी दी है कि
यरूशलेम जो यहूदा में हैं, उस में मेरा भवन
बनाओ। इसलिए उसकी प्रजा के सभी लोगों
को छूट है कि वे वहाँ के लिए रवाना हो
जाएँ। प्रभु उनके साथ होंगे।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com